ओ३म्

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
मास – आषाढ़ 2070
जुलाई 2013

अंक 96, मूल्य 10 रु.

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

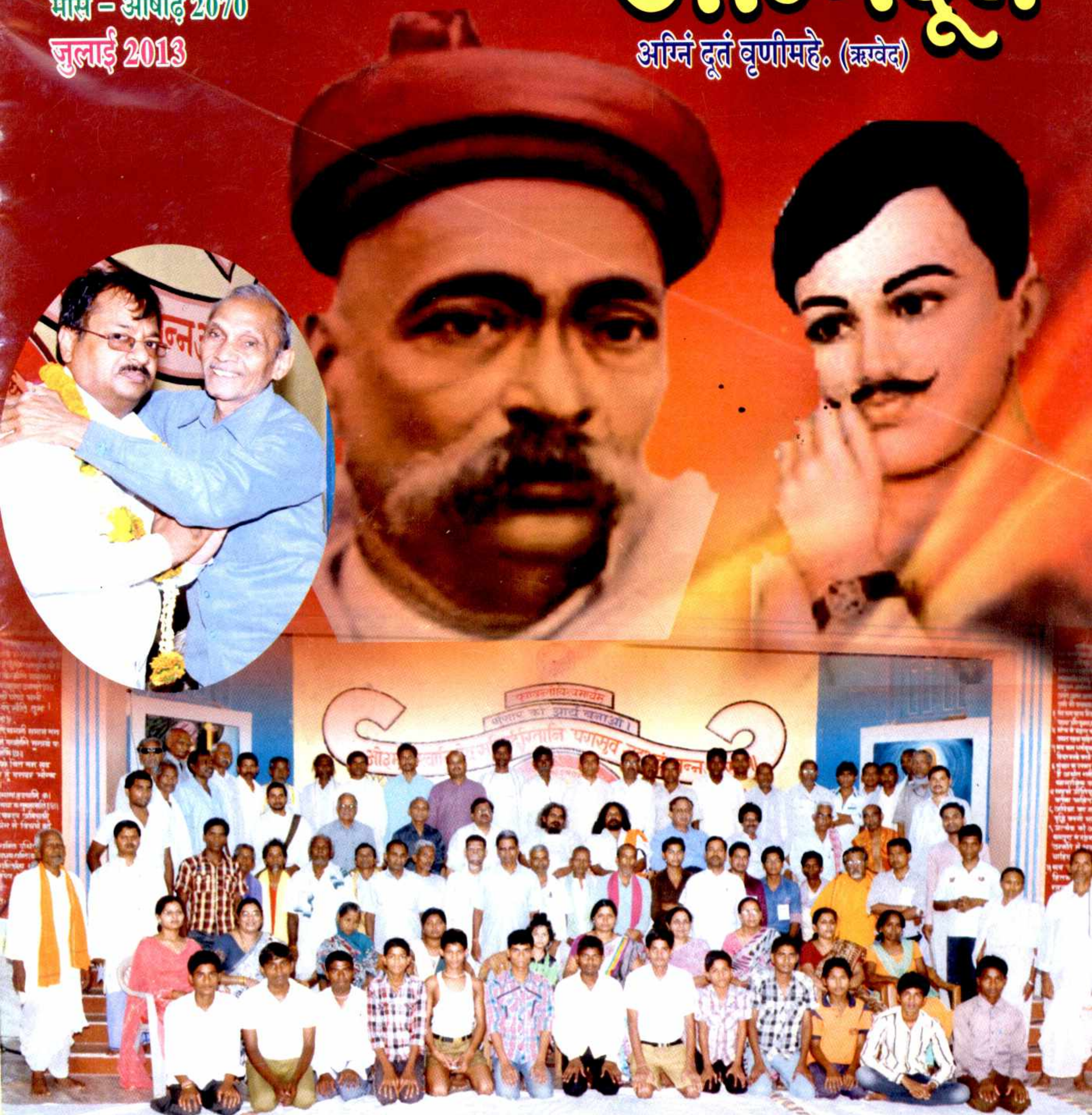

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित पांच दिवसीय वैचारिक क्रान्ति शिविर भिलाई में सम्पन्न

वैचारिक क्रान्ति शिविर में आर्य पदाधिकारी एवं आचार्यगण

अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

विक्रमी संवत् - २०७०
सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,११४
दयानन्दाब्द - १९०

वर्ष - ०९, अंक १ | ओ३म् | मास/सन् - जुलाई २०१३

श्रुतिप्रणीत–सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त–दीप्त वेद–सारभूतनिश्चयं।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सज्ञसज्ञकम्,
सभाग्निदूत–पत्रिकेयमादधातु मानसे।।

: प्रधान सम्पादक :
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान सभा
(मो. ८८२७७५०४७८)

: प्रबंध सम्पादक :
आर्य दीनानाथ वर्मा
मंत्री सभा
(मो. ९८२६३६३५७८)

: सहप्रबंध सम्पादक :
श्री अवनीभूषण पुरंग
कोषाध्यक्ष सभा
(मो. ९८९३०६३९६०)

: व्यवस्थापक :
श्री दिलीप आर्य
उपमंत्री (कार्यालय) सभा
मो. ९७५२३८८२६७

: सम्पादक :
आचार्य कर्मवीर
मो. ९७५२३८८२६७

कार्यकारी सम्पादक
आचार्य धनञ्जयशास्त्री 'जातवेदाः'
मो. ९०३९६९९२१९

पेज सज्जक : श्रीनारायण कौशिक
प्रबधंक : श्री रामेश्वर प्रसाद यादव
सहायक : श्री मस्तराम आर्य

- कार्यालय पता -
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.)४९१ ००१
फोन : (०७८८)२३२२२२५, ४०३०९७२
फैक्स नं. : ०७८८-४०११३४२;
e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

वार्षिक शुल्क - १००/- दसवर्षीय-८००/-

विषय - सूची

			पृष्ठ क्र.
१.	वेदामृत : तेरे यश उत्तम हो	स्व. डॉ. रामनाथ वेदालङ्कार	०४
२.	सम्पादकीय : बरबादी की राह पर युवा पीढ़ी, आखिर क्या है उपाय सुझाव के ?	आचार्य कर्मवीर	०५
३.	बारहों महीने सत्यार्थ प्रकाश	सत्यार्थ प्रकाश से	०७
४.	वीरता परमोधर्मः एक प्रगतिशील संन्यासी के उद्गार	डॉ. भवानीलाल भारतीय	०९
५.	हमारी जाति–मानव है	पत्रकार आनन्द कुमार	११
६.	जब है समाधान तो क्यों हैं परेशान	डॉ. दिव्येश्वर शास्त्री	१३
७.	आर्यसमाज और अन्तर्जातीय विवाह वर्त्तमान परिपेक्ष्य में	श्री अर्जुनदेव चड्ढा	१५
८.	सब कुछ लुटा के होश में आए तो क्या किया	स्वामी रामानन्द सरस्वती	१८
९.	आत्मा–कैसी, कहाँ, कितनी	ले. अजय शर्मा	२१
१०.	क्या ईश्वर ही पार लगायेगा ???	आचार्य आर्य नरेश	२३
११.	महान् राष्ट्र भक्त–बाल गंगाधर तिलक	आचार्य भगवानदेव चैतन्य	२४
१२.	अमर शहीद–चन्द्रशेखर आजाद	लोचन कुमार आर्य	२६
१३.	अनुभव दर्पण	आचार्य धनञ्जय शास्त्री	२७
१४.	होमियोपैथी चिकित्सा विज्ञान और मानव जीवन शैली	डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी	२८
१५.	समाचार दर्पण		३०

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का परिवर्त्तित अणुसंकेत (ई-मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

सूचना : हमारा नया वेब साइट देखें
Website : http:/www.cgaryapratinidhisabha.com

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा पायोनियर प्रिन्टर्स, ओमपरिसर, आर्यनगर, दुर्ग से छपवाकर छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग से प्रकाशित किया गया।

वेद वेदामृत

तेरे यश उत्तम हो

भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

अग्ने शर्ध महते सौभगाय, तव द्युम्नान्युत्तमानि सन्तु।
सं जास्पत्यं सुयममाकृणुष्व, शत्रूयतामभि तिष्ठा महांसि ।। ऋग्. ५,२८,३

ऋषिः **विश्ववारा आत्रेयी**। देवता **अग्निः**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

● **(अग्ने)** हे अग्रणी मानव ! **(महते)** महान् **(सौभगाय)** सौभाग्य के लिए (शर्ध) उत्साह धारण कर। (तव) तेरे **(द्युम्नानि)** यश **(उत्तमानि)** उत्तम **(सन्तु)** हों। **(जास्पत्यं)** जाया-पति-भाव को **(सं)** सम्यक् प्रकार **(सुयमं)** सुनियंत्रित **(आ कृणुष्व)** कर। **(शत्रूयतां)** शत्रुता का आचरण करने वाले के **(महांसि)** तेजों को **(अभितिष्ठ)** आक्रान्त कर।

● **जी**वन में प्रत्येक मनुष्य सुभग बनना चाहता है। भग इतनी महत्वपूर्ण वस्तु है कि परमेश्वर भी उसे धारण करते हैं और भगवान् कहाते हैं। प्रत्येक प्रकार के निर्दोष ऐश्वर्य का नाम भग है, चाहे वह भौतिक ऐश्वर्य हो, चाहे मानसिक या आत्मिक। हे अग्रगामी मानव ! यदि तू भी उस ऐश्वर्य को पाना चाहता है, तो उत्साह धारण कर, अपने अन्दर उसे पाने की अभीप्सा उत्पन्न कर और उसे पाने के लिए प्रयत्नशील हो। उसे पाकर तू सौभाग्यवान् कहलाने लगेगा। सौभाग्य के अन्दर सफलता, श्री, उत्कर्ष, विजय, उल्लास आदि अनेक उपलब्धियाँ समाविष्ट हैं। सौभाग्य जन्म से किसी के माथे पर नहीं लिखा होता। उत्साह ही सौभाग्य की कुंजी है। उत्साही बन और सौभाग्य को हस्तगत कर। तेरे यश उत्तम हों, अत्यन्त ऊंचाई तक दिग्-दिगन्त में व्याप्त हों, साथ ही गुण की दृष्टि से भी उत्तम हों। मनुष्य की पहचान उसके यश से होती है। साधारण यशवाला मनुष्य साधारण कोटि का, मध्यम यशवाला मनुष्य मध्यम कोटि का और उत्तम यशवाला मनुष्य उत्तम कोटि का गिना जाता है। तू उत्तम यश से जगमगा, उच्चतम उज्ज्वल कीर्ति का पात्र बन। बल, विज्ञान, धर्म, पौरुष आदि प्रत्येक क्षेत्र में तेरी कीर्तिकौमुदी का विस्तार हो।

हे मानव ! तू जाया-पति-भाव को भी सुनियंत्रित रख। पूर्णता की प्राप्ति के लिए और जीवन-रथ को सुचारु रूप से संचालित करने के लिए मनुष्य जाया-पति-भाव के बन्धन में बद्ध होता है। यह बन्धन यज्ञ और संस्कार के साथ स्वीकार किया जाता है। यह आश्रम का बन्धन है, पवित्र बन्धन है। अतः अपने जाया-पति-भाव को सम्यक्-नियन्त्रण, जितेन्द्रियता और यम-नियमों के पालन के साथ व्यतीत कर। तब तुझे अमृत-फल प्राप्त होगा।

हे अग्रगन्ता ! जीवन-मार्ग में आगे बढ़ते हुए तेरे साथ अनेक व्यक्ति शत्रुता का आचरण करेंगे। कई बार मित्र भी शत्रु हो जायेंगे और तुझे मार्ग-च्युत करने का प्रयास करेंगे। जब तेरे शत्रु साज-बाज के साथ तुझे वशीभूत करने आयें, तब तू उनके तेजों को आक्रान्त करले और उन्हें प्रदर्शित कर दे कि आगे बढ़ने की उमंगवाले सत्य-मार्ग के यात्री के अन्दर कैसी प्रबल शक्ति होती है।

पता - गीता आश्रम, वेद मंदिर, ज्वालापुर, हरिद्वार (उत्तराखंड)

संस्कृतार्थ :- १. शर्ध उत्सहस्व। शृधु प्रसहने। २. जास्पत्यं जायापत्यम्। ३. ये शत्रवः इव आचरन्ति तेषाम्।

सम्पादकीय

बरबादी की राह पर युवा पीढ़ी : आखिर क्या हैं उपाय सुरक्षा के ?

यह बात सभी जानते हैं प्रत्येक समाज की सर्वाधिक महत्वपूर्ण शक्ति युवा पीढ़ी होती है क्योंकि युवा में अन्यों की अपेक्षा शारीरिक एवं मानसिक शक्ति सर्वाधिक होती है। समाज की सम्पूर्ण उन्नति के लिए युवा वर्ग का शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति आवश्यक है। यदि युवा दुर्बल या दुर्गुणों में फंसे हैं तो उत्थान की बात बेमानी ही साबित होगी, क्योंकि युवा ही देश के श्रम एवं शक्ति के अक्षय भण्डार हैं।

यह भी सच है हमारी युवा पीढ़ी ने शिक्षा के क्षेत्र में तारीफ-ए-काबिल तरक्की की है, जिसमें नैतिकता के सभी क्षेत्रों में अपना वर्चस्व स्थापित किया है, किन्तु यह बात हम बिल्कुल नकार नहीं सकते कि आज की अधिकांश भावी पीढ़ी भटकाव की राह पर ही अपना कदम धरती जा रही है, उसे जीवन के सही उद्देश्य का ज्ञान ही नहीं है। वह कच्ची उम्र में ही जिन्दगी के सारे सुख भोग लेना चाहती है उसने अपनी जिन्दगी का यही मकसद समझ लिया है वह तो खुलेआम यही कहता है "अरे कल किसने देखा है इसलिए आज और अभी ही मन की कर डालो" इसी मृगमरीचिका के प्रयास में अपने उज्ज्वल भविष्य को चौपट करता हुआ वह अपनी शारीरिक मानसिक आत्मिक एवं सामाजिक उत्थान के मूलभूत उद्देश्य को ही तिलांजलि दे रहा है फलस्वरुप उन परिस्थितियों का भी उसे सामना करना पड़ रहा है जिसकी उसने कल्पना तक भी नहीं की थी। आज युवाओं के चेहरों पर से तेज निरन्तर गायब होता रहा है पिचके गाल धंसी आँखे अनियंत्रित चाल सब अपने आप बयां कर देती है। समय से पहले बुढ़ापा के चिन्ह भी सिर पर अपनी छाप छोड़ रहे हैं। उनकी वेशभूषा का तो भगवान ही मालिक है, पता नहीं कपड़े के किस आकार प्रकार को वे कौन से नए फैशन का नाम दे दें थोड़े दिन पहले एक युवक सामने नजर आया उसकी जींस पेंट तीन चार जगह से फटी हुई थी जिससे उसकी जांघ के हिस्से दिख रहे थे मैने पूछा यह क्या ? उसने बड़ी शान से कहा - सर यह आजकल चलन में है। वाह रे ! भौतिकता में भटके युवा ! कटे फटे कपड़े को भी शान समझ रहा है। जबकि वस्त्र धारण का उद्देश्य शारीरिक सुरक्षा के साथ लज्जा का निवारण भी है। इस फैशन ने कबाड़ा ही किया है। युवतियों के पहनावे की तो बात करना ही बेकार है, उन्होने अंग प्रदर्शन के क्षेत्र में अपने झंडे गाड़े हुए हैं। जिन कपड़ों से गोपनीय अंग जितने अधिक दिख सके वे ही इनकी पहली पसंद है। पिछले दिनों दिल्ली की बलात्कारी घटना के बाद देश में जो भूचाल आया था उससे अजीब-अजीब तरह की बहस छिड़ गई थी। अपने अपने हिसाब से सभी इसके कारणों का विश्लेषण

कर रहे थे। कुछ कह रहे थे कि इन घटनाओं के पीछे सबसे बड़ा कारण छोटे, पारदर्शी एवं भड़कीले कपड़े पहनना है, जिस से मनचलों का सन्तुलन गड़बड़ाकर अवांछित स्थितियाँ निर्मित होती है। इस विश्लेषण को शिरे से नकारा नहीं जा सकता ।

युवा शक्ति की बर्बादी के पीछे एक कारण है उनकी मनमानी अनियमित दिनचर्या भी है, देर रात तक टी.वी. से चिपके रहना, नाइट क्लबों में जाकर नाचना कूदना, फिर घर लौटकर दिन होते तक सोते रहना ये आदतें आगे जाकर भयंकर शारीरिक समस्याओं का शिकार बना देती हैं।

स्वच्छन्द व्यवहार - युवा पीढ़ी आज अपनी शिक्षा दीक्षा भोजन वेशभूषा मनोरंजन तथा कहीं भी आने जाने में किसी का भी हस्तक्षेप पसन्द नहीं करते । बड़े-बूढ़े यदि उन्हें टोकने का साहस जुटाते भी हैं तो सिर्फ बदले में उन्हें अपमान ही मिलता है । हर बात पर आज की यह पीढ़ी इससे हमें क्या लाभ है यही सवाल पूछती है कुलमिलाकर इनका नजरिया ही दोषपूर्ण होता जा रहा है । इनके खान-पान की तो बात ही अजीब है शराब, मांस, अंडे इत्यादि अभक्ष्य वस्तुएँ इनकी पसंद है, सिगरेट, चरस, गांजा, स्मेक तथा नाना रुपों के पैक में सजे पान मसाले गुटखे इनकी शान है, आए दिन अखबारों में कैंसर जैसे घातक रोग के कारण साबित होने के बाद भी ये धड़ल्ले से गटकते जा रहे हैं । इसके लिए चरित्र की बात करना आज पूरी तरह से बेमानी सिद्ध हो चुकी है । कल किसने देखा के तर्ज पर ये कच्ची उम्र में ही वह सब कुछ कर लेना चाहते हैं जिसे करने हमारा समाज वयस्क होने के बाद ही सामाजिक मर्यादाओं के आधार पर इजाजत देता है । कॉलेज के सामने युवाओं की भीड़ से यह अंदाजा मत लगाइयेगा कि ये क्लास रुम में भी ऐसे ही मिलेंगे वहां तो अधिकांश बैंच टेबल खाली ही मिलेंगे । मनोरंजन के नाम पर ऐसे ऐसे फूहड़ गाने इनकी पसंद है, जिन्हें सुनकर कोई भी सभ्य व्यक्ति शर्म से सिर नीचा कर लेगा, पिछले फरवरी में दुर्ग से हरिद्वार जाते समय रायपुर मेडिकल कालेज के छात्र-छात्राओं की एक टीम किसी प्रशिक्षण हेतु अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली जा रही थी, उनके फूहड़ गाने एवं धींगा मस्ती से पूरी बोगी परेशान हो उठी आखिर एक भद्र महिला ने फटकार लगाते हुए कहा क्या आपके घरों में बहन बेटियां नहीं है, मुझे कहते हुए भी शर्म आ रही है कि आप लोग मेडिकल के छात्र हैं। तब कहीं जाकर माहोल थोड़ा शान्त हुआ। क्या कहें, इस संस्कृति के पीछे संस्कारहीन माता-पिताओं का भी हाथ है । सदाचारी शिक्षकों का अभाव है, आध्यात्मिक भावना की शून्यता है, अन्धविश्वासी मानसिकता है ।

उपरोक्त तमाम समस्याओं से यदि आज की पीढ़ी को हम बचाना चाहते हैं तो उन्हें उचित समय पर उचित संस्कार योग्य गुरुओं का मार्गदर्शन, वैज्ञानिक सोच का विकास, पाखंड एवं अन्ध श्रद्धा से दूरी, चैनल संस्कृति के दुष्प्रभाव से रक्षा, सत्संगति इत्यादि, ऐसे उपाय हैं जिससे हम ऋषियों के सपनों का भारत बनाने में सक्षम हो पायेंगे, **नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय ।**

- आचार्य कर्मवीर

सामयिक संदेश

बारहों महीने सत्यार्थ प्रकाश

आषाढ़ मास जगन्नाथ यात्रा के संबन्ध में

***(प्रश्न)** भला यह तो जाने दो **परन्तु जगन्नाथ जी में प्रत्यक्ष चमत्कार है।** एक कलेवर बदलने के समय, चंदन का लकड़ा समुद्र में से स्वयमेव आता है। चूल्हे पर ऊपर ऊपर सात साथ हैंडे धरने से ऊपर २ के पहिले २ पकते हैं और जो कोई वहां जगन्नाथ की परसादी न खावे, तो कुष्ठी हो जाता है, और रथ आप से आप चलता, पापी को दर्शन नहीं होता है। इन्द्रमन के राज्य में देवताओं ने मंदिर बनाया है। कलेवर बदलने के समय एक राजा, एक पंडा, एक बढ़ई मर जाने से आदि चमत्कारों को तुम झूठ न कर सकेंगे ?*

(उत्तर)जिसने बारह वर्षपर्यन्त जगन्नाथ की पूजा की थी, वह विरक्त होकर मथुरा में आया था, मुझसे मिला था। मैंने इन बातों का उत्तर पूछा था।

उन्होंने ये सब बातें झूठ बताई, किन्तु विचार से निश्चय यह है जब कलेवर बदलने का समय आता है, तब नौका में चन्दन की लकड़ी ले समुद्र में डालते हैं, वह समुद्र की लहरियों से किनारे लग जाती है। उसको ले सुतार लोग मूर्त्तियाँ बनाते हैं। जब रसोई बनती है, तब कपाट बन्द करके रसोइयों के बिना अन्य किसी को न जाने, न देखने देते हैं। भूमि पर चारों ओर छः और बीच में एक चक्राकार चूल्हे बनाते हैं। उन हण्डों के नीचे घी, मिट्टी, और राख लगा, छः चूल्हों पर चावल पका, उनके तले माँजकर, उस बीच के हण्डें में उसी समय चावल डाल, छः चूल्हों के मुख लोहे के तवों में बंध कर, दर्शन करने वालों को जो कि धनाढ्य हों, बुला के दिखलाते हैं। ऊपर २ के हण्डों से चावल निकाल पके हुए चावलों को दिखला, नीचे कच्चे चावल निकाल दिखा के उनसे कहते हैं कि कुछ हण्डों के लिये रख दो। आँख के अंधे गांठ के पूरे, रुपये, अशर्फी धरते और कोई कोई मासिक भी बाँध देते हैं। शूद्र, नीच लोग मन्दिर में नैवेद्य लाते हैं। जब नैवेद्य हो चुकता है, तब वे शूद्र, नीच लोग जूंठा कर देते हैं। पश्चात् जो कोई रुपया देकर हण्डा लेवे, उसके घर पहुंचाते और दीन गृहस्थ और साधु सन्तों को लेके शूद्र और अन्त्यज पर्यन्त एक पंक्ति में बैठ, जूंठा एक दूसरे का भोजन करते हैं। जब वह पंक्ति उठती है, तब उन्हीं पतलों पर दूसरों को बैठाते जाते हैं, महा अनाचार है। और बहुतेरे मनुष्य वहाँ जाकर उनका जूंठा न खाके, अपने हाथ बना खाकर चले आते हैं। कुछ भी कुष्ठादि रोग नहीं होते, और उस जगन्नाथपुरी में भी बहुत से परसादी नहीं खाते, उनको भी कुष्ठादि रोग नहीं होते, और उस जगन्नाथपुरी में बहुत से कुष्ठी हैं नित्यप्रति जूंठा खाने से भी रोग नहीं छूटता। और यह जगन्नाथ में वाममार्गियों ने भैरवीचक्र बनाया है, क्योंकि सुभद्रा श्रीकृष्ण और बलदेव की बहिन लगती है, उसी को दोनों भाईयों के बीच में स्त्री और माता के स्थान बैठाई है, जो भैरवीचक्र न होता तो यह बात कभी न होती। और रथ के पहियों के साथ कला बनाई है, जब कोई सूधी घुमाते हैं, घूमती हैं, तब रथ चलता है। जब मेले के बीच में पहुंचता है, तभी उसकी कील को उलटी घुमा देने से रथ खड़ा रह जाता है। पुजारी लोग पुकारते हैं दान देओ, पुण्य करो, जिससे जगन्नाथ प्रसन्न होकर अपना रथ चलावें, अपना धर्म रहे। जब तक भेंट आती जाती है, तब तक ऐसे ही पुकारते जाते हैं। जब आ चुकती है, तब एक ब्रजवासी अच्छे कपड़े दुसाला ओढ़ कर आगे खड़ा रह के हाथ जोड़ स्तुति करता है, कि "हे जगन्नाथ स्वामिन्! आप कृपा करके रथ को चलाइये, हमारा धर्म रक्खो", इत्यादि बोल के साष्टाङ्ग दंडवत् प्रणाम कर रथ पर चढ़ता है, उसी समय कील को सूधा घुमा देते हैं, और जय-जय शब्द बोल सहस्त्रों मनुष्य रस्सी खींचते हैं, रथ चलता है। जब बहुत से लोग दर्शन को जाते हैं, तब इतना बड़ा मन्दिर है कि जिसमें दिन में भी अंधेरा रहता है और दीपक जलाना पड़ता है। उन मूर्त्तियों को आगे परदे खेंच कर

लगाने के पर्दे दोनों ओर रहते हैं। पंडे-पुजारी भीतर खड़े रहते हैं। जब एक ओर वाले ने पर्दे को खींचा, झट मूर्त्ति आड़ में आ जाती है। तब सब पंडे और पुजारी पुकारते हैं। तुम भेंट धरो, तुम्हारे पाप छूट जायेंगे, तब दर्शन होगा, शीघ्र करो। वे बिचारे भोले धूर्तों के हाथ लूट जाते हैं, और झट पर्दा दूसरा खैंच लेते हैं, तभी दर्शन होता है। तब जय शब्द बोल के प्रसन्न होकर धक्के खा के तिरस्कृत हो, चले आते हैं। इन्द्रदमन वही है, जिसके कुल के अब तक कलकत्ते में हैं। वह धनाढ्य राजा और देवी का उपासक था। उसके लाखों रुपये लगाकर मंदिर बनवाया था, इसलिये कि आर्यावर्त्त देश के भोजन का वखेड़ा इस रीति से छुड़ावें, परन्तु वे मूर्ख कब छोड़ते हैं। देव मानो तो उन्हीं कारीगरों को मानो कि जिन शिल्पियों ने मंदिर बनाया। राजा, पंडा और बढ़ई उस समय नहीं मरते, परन्तु वे तीनों वहाँ प्रधान रहते हैं। छोटों को दुःख देते होंगे। उन्होंने संमति करके उसी समय अर्थात् कलेवर बदलने के समय वे तीनों उपस्थित रहते हैं। मूर्त्ति का हृदय पोला रखा है। उसमें सोने के सम्पुट में एक सालगराम रखते हैं कि जिसको प्रतिदिन धोके चरणामृत बनाते हैं, उस पर रात्रि की शयन आरती में उन लोगों ने विष का तेजाब लपेट दिया होगा, उसको धो के उन्हीं तीनों को पिलाया होगा कि जिससे वे कभी मर गये होंगे। मरे तो इस प्रकार और भोजन भट्टों ने प्रसिद्ध किया होगा कि जगन्नाथ जी अपने शरीर बदलने के समय तीनों भक्तों को भी साथ ले गये। ऐसी झूठी बातें पराये धन ठगने के लिये बहुत सी हुआ करती हैं।

✍ **वर्तमान समय में संस्कृत का एक ही बड़ा विद्वान्, वेदों का महत्व समझने वाला, अत्यन्त प्रबल नैयायिक और विचारक यदि भारत में हुआ है तो वह महर्षि दयानन्द सरस्वती ही था। वेद उनको हस्तामलक थे। - *(प्रो. मैक्समूलर, जर्मनी)***

- महान प्रश्न -

कारण पहले या कार्य ?

शेफील्ड और वारविक विश्वविद्यालय के शोधकर्त्ताओं ने दावा है कि उनके पास इस सवाल का जवाब है। धरती पर अण्डा से पहले मुर्गी का जन्म हुआ था। कम्प्यूटर मॉडलिंग का उपयोग करते हुए एक प्रोटीन का पता लगाया है, जिसे ओसी १७ या फिर ओवोक्लाइडीन १७ के नाम से जाना जाता है। यह प्रोटीन ही अण्डे का खोल तैयार करने में सहायता करता है और यह प्रोटीन सिर्फ मुर्गी के शरीर के एक हिस्से (अण्डाशय) से ही पैदा होता है। पहिले मुर्गी आई फिर अण्डा पैदा हुआ।

लेकिन मुर्गी कहाँ से आई ? इसका जवाब भौतिक या रसायन विज्ञानी के पास नहीं अपितु आध्यात्म विज्ञानी के पास है। जब सर्गारंभ होता है तब परमात्मा की प्रेरणा से सत्व-रजस-तमस् की साम्यावस्था वाली प्रकृति में हलचल होती है और असाम्यावस्था उत्पन्न होकर महत् (बुद्धि) की रचना तत्पश्चात् अहंकार (Differentiation) क्रमशः सात्त्विक अहंकार से मन तथा दस इन्द्रियाँ, तमस् अहंकार से पंच तन्मात्रा (सूक्ष्मभूत) तत्पश्चात् स्थूलभूत की उत्पत्ति होती है। परमात्मा की प्रेरणा से आवश्यक तत्वों का एकत्रीकरण होकर प्रत्येक जीवधारी के शरीर का निर्माण और सृजन अमैथुनी पद्धति से होती है। सर्गकाल में यथातथ्य मैथुनी सृष्टि का क्रम चल पड़ता है। मुर्गी का शरीर प्रथम बना फिर अण्डा बना। कारण से कार्य का समुद्भव होता है।

– एक विचोरोत्तेजक लेख

वीरता परमो धर्मः एक प्रगतिशील संन्यासी के उद्‌गार

- डॉ. भवानीलाल भारतीय

मूलतः गुजरात के निवासी स्वामी सच्चिदानन्द प्रगतिशील तथा नये विचारों को सहर्ष स्वीकार करने वाले संन्यासी हैं। आर्यसमाज से उनका सम्बन्ध रहा है और उन्होने ऋषि दयानन्द की एक विचारोत्तेजक जीवनी अपनी मातृभाषा गुजराती में लिखी है। आर्यसमाज से अपने सम्बन्ध विषयक तथ्यों को उनके ही शब्दों में सुनें - "एक वृद्ध व्यक्ति के सम्पर्क में आया। वे आर्यसमाजी थे। मैं उनके घर जाता तथा हवन में शामिल होता। उन्होंने मुझे सत्यार्थ प्रकाश की पुस्तक दी। मैंने इसे ध्यान देकर रुचि के साथ पढ़ा। मुझे यह ग्रन्थ अच्छा लगा। बाद में तो एक के बाद एक अनेक आर्यसमाज विषयक ग्रन्थ पढ़े। मैं स्वयं आर्यसमाजी बन गया। खण्डन प्रवृत्ति को प्रधानता देने के कारण कई इस संस्था को नास्तिक मानते हैं (जो सही नहीं है) मेरी और उक्त सज्जन की जोड़ी बन गई। हम कई बार समीप के गांवों में धर्मप्रचार करते। आर्यसमाज मूर्तिपूजा को अमान्य करता है। उसका कहना है कि वेदों में मूर्त्तिपूजा नहीं है। वेद ईश्वरोक्त होने से प्रामाणिक शास्त्र है। पुराणों में पाप लीला (पोप लीला) है। इसका त्याग उचित है। एक मात्र निरञ्जन, निराकार परमात्मा की उपासना करनी चाहिए। मेरे ऊपर सर्वाधिक प्रभाव महर्षि दयानन्द का पड़ा। उनकी तर्क शक्ति, निडरता, त्याग तथा हिन्दू प्रजा के कल्याण की वृत्ति, साथ ही राष्ट्र भक्ति का मुझ पर पर्याप्त प्रभाव पड़ा।"

एक अन्य प्रसंग में उन्होंने स्वामी दयानन्द तथा स्वामी विवेकानन्द की तुलना करते हुए लिखा है - आत्मश्लाघा करने से प्रजा महान नहीं होती। स्वयं की भूलों तथा दोषों को सुधारने से वह महान होती है। हिन्दू प्रजा को आत्मश्लाघा का बड़ा रोग लग गया है। हम महान हैं यह नारा लगा कर वे हिन्दू तृप्ति अनुभव करते हैं। स्वामी विवेकानन्द ने इस आत्मश्लाघा के नशे को बढ़ाने में योगदान दिया है। इससे आत्म श्लाघा रूपी नशे को पसन्द करने वाले लोगों को स्वामी विवेकानन्द बहुत पसन्द आते हैं। दयानन्द जी को सत्य के उपासक ही पसन्द करते हैं, कारण कि उन्होने ऐसी मिथ्या आत्मश्लाघा का नशा नहीं फैलाया। ध्यान रहे कि झूठा अहंकार और स्वयं की स्थिति का यथार्थ ज्ञान मित्र है। (तमिलनाडु की यात्रा पृ. ९९)

यही स्वामी सच्चिदानन्द अहिंसा परमो धर्मः के स्थान पर वीरता परमो धर्मः का पाठ करते हैं। उनके विचार (गुजरात से अनुदित) इस प्रकार हैं - मेरा अमेरिका जाना हुआ। वहां एक अमेरिकन सज्जन मिले। उन्होंने मुझसे पूछा - "स्वामी जी विश्व में ऐसा कौन सा देश है जहां के बहुमत रखने वाले लोग (हिन्दू)दस पन्द्रह प्रतिशत अल्पमत वालों (मुसलमानों से) मार खाते हैं?" मैंने उत्तर में कहा - "यह तो मेरा ही देश (भारत) है।" उसने कहा तो फिर ऐसा क्यों हुआ, क्या उन्होने अपना धर्म (आत्मरक्षा का) नहीं सीखा। उसकी बात सच थी। भारत में मुसलमान अल्पसंख्यक तथा हिन्दू बहुसंख्यक है। तथापि मुसलमानों की अल्प संख्या शेर और बाघ जैसी है, जबकि हिन्दुओं की बहुसंख्या हिरणों जैसी है। इस अन्तर को कोई नहीं समझना चाहता। यही कारण है कि जब साम्प्रदायिक दंगे होते हैं, तब मुसलमान हिन्दुओं को मारते हैं। हिन्दू प्रजा मरती है, कारण कि वह सामना (मुकाबला) नहीं करती। मात्र जान बचाने के लिए हिरणों के समान भाग जाती है। आजादी से पहले तो अत्यन्त विकट स्थिति थी। तब आबादी की अदला-बदली का प्रस्ताव आया था। जिन्ना साहब इस विचार से सहमत थे, सरदार पटेल तथा डॉ. अम्बेडकर भी सहमत थे। परन्तु गांधी जी तथा नेहरु जी ने उस सुझाव को नहीं माना। उनको आशा थी कि सब ठीक हो जायेगा तथा हिन्दू मुसलमान हिलमिल कर रहेंगे। मेरा विचार है कि गांधी जी मुसलमानों की मानसिकता को नहीं समझ सके। अधिकांश लोग मुसलमानी शासन (निजामे मुस्तफा) को अच्छा समझते थे। उनकी

धार्मिकता राजनीति से जुड़ी थी। वे प्रतीक्षा करते हैं, धैर्य रखते हैं, परन्तु अन्तिम लक्ष्य निजामे इस्लाम का ही रखते हैं। मेरा मानना है कि जिस दिन आबादियों की अदला-बदली को नामंजूर किया गया उसी दिन से हिन्दुओं की दुबारा गुलामी का बीजारोपण हो गया। जिन्ना का कहना था कि मुसलमान और हिन्दू साथ-साथ नहीं रह सकते, कारण कि दोनों की जीवन पद्धतियाँ भिन्न हैं। इसलिए उन्हें अलग देश मिलना चाहिए। सच यह है कि विचार भिन्नता के कारण इन दोनों समुदायों का साथ रहना कठिन है। गांधी जी मानते थे कि नहीं, दोनों लोग साथ रह सकते हैं। गांधी जी की धारणा सत्य सिद्ध नहीं हुई। आजादी के बाद भी साम्प्रदायिक उपद्रव होते रहे। हिन्दू मार खाते रहे। सरकार मुसलमानों का पक्ष लेकर उनका उत्साह बढ़ाती रही। इसकी प्रतिक्रिया में कहा हिन्दुत्व वाले संगठन (बजरंग दल, श्रीराम सेना, अभिनव भारत) पैदा हुए।

हिन्दूवादी संगठन भारत के देशकाल की भव्यता की बाते करते हैं। हम महान हैं (या थे) को नशीली घुट्टी पिलाते हैं। किन्तु कोई परिणाम या परिवर्तन दिखाई नहीं देता। मैंने इतिहास का अध्ययन किया तो इस नतीजे पर पहुंचा कि हिन्दू प्रजा सैकड़ों वर्षों से मार खाती रही है। यहां जो आक्रमणकारी आये वे सरलता से विजयी हुए और यहां राज किया। ग्रीक, शक, हूण, कुषाण, अरब, ईरानी, तुर्क, मुगल, पठान, अफगान, अन्त में पुर्तगाली, डच, फैंच, अंग्रेज यहां आये और सरलता से राज किया। यहां की मूल प्रजा (हिन्दू) लगातार हारती रही। तब हम अपने को महान कैसे कहें ? व जीतने वाले महान या हारने वाले महान ? उनकी मुट्ठी भर संख्या थी और यहां (हिन्दू) लाखों करोड़ों होने पर भी वे जीते और हम हारे। उस कठोर वास्तविकता को हिन्दू नेता न समझते हैं और न स्वीकारते हैं। महानपने का नशा पीते पिलाते हैं। यह नहीं सोचते कि इतनी विशाल प्रजा पराजित क्यों हुई? आइये निरीक्षण करते हैं।

आवश्यकता है चिन्तन को बदलने की

मैंने इतिहास से जाना कि सिवाय राजपूतों के यहां की प्रजा में कोई योद्धा वर्ग का नहीं था। सामाजिक व्यवस्था के कारण अवशिष्ट प्रजा शस्त्र विहीन थी। कोढ़ में खाज की भांति इसमें अहिंसावाद थी, मूर्खतापूर्ण अवधारणा आ मिली। अहिंसावाद तथा शस्त्र विमुखता के अतिरेक के कारण प्रजा में आक्रामता का भाव नहीं आया। शस्त्रधारी लोग इनसे सरलतापूर्वक विजयी हो जाते तथा इन्हें अपने अधिकार में ले लेते। कोई उफ तक नहीं करता। जो थोड़ी बहुत शस्त्रधारी प्रजा थी, वह परस्पर बंटी हुई, आपस में शत्रु भाव रखने वाली परस्पर लड़ने वाली थी। लड़ने का मुख्य कारण औरत होता था। यह वीर प्रजा अपनी वीरता का प्रदर्शन रक्षात्मक नीति के रूप में ही करती। आक्रमण करने में नहीं। शत्रु खैबर और बोलन के दर्रों में होकर हमारे अन्तिम किलो तक पहुंच जाता तब तक हमारे सिपाही निष्क्रिय रहते। तत्पश्चात् अपने किले के द्वार बंद कर रक्षात्मक युद्ध करते। अधिकांश में हमारे सैनिक हार जाते। बाद में पुरुष केसरिया पहन कर अन्तिम मरणात्मक युद्ध करते तथा स्त्रियाँ जौहर कर अपना बलिदान करतीं। इस प्रकार कुलीन रक्त (Royal Blood) खत्म हो जाता। यह शत्रु के अनुकूल होता। जब हमारे एक किले पर हमला होता तो पड़ोसी राजा चुपचाप देखते रहते। कोई मदद के लिए नहीं आता। पारस्परिक शत्रुता के कारण ऐसा होता। एक को पराजित कर शत्रु दूसरे को निशाना बनाता। इस प्रकार से भारतीय नरेश हारते जाते।

शेष अगले अंक में....

पता : ३/५ शंकर कालोनी, श्रीगंगानगर

शिक्षक की आवश्यकता है

छत्तीसगढ़ प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित **तुलाराम आर्य कन्या विद्यालय कूरा** (धरसींवा) रायपुर छ.ग. में हायर/हाईस्कूल के लिए **गणित एवं विज्ञान विषय हेतु शिक्षकों की आवश्यकता है।** अनुभवी को प्राथमिकता। वेतन योग्यतानुसार। शीघ्र सम्पर्क करें। पत्र व्यवहार पता :-

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा,

दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) ४९१००१

दूरभाष : 0788-232225, मोबा. ९९२६६८८४५१

तथ्यात्मक हमारी जाति-मानव हैं

- दाऊ आनंद कुमार, पत्रकार, रायपुर

दृष्टिकोण

गुरु गोविन्द सिंह का कहना है - मानव की जात सब एक ही पहचानबो वेदों में लिखा है <u>माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः</u> अर्थात् धरती हमारी माता है और मैं इसका पुत्र हूँ। हम सभी मानव तो धरती की संतान हैं तो हमारी जात अलग कहां से हुई। इसलिये हमारी जाति-मानव है।

जात देश अऊ सम्प्रदाय, मानवता के शत्रु आय, आर्यों ने जो वर्ण व्यवस्था बना वह कर्मानुसार हुआ करती थी। फलस्वरुप एक सामाजिक समस्या बनी हुई थी, इसके कई मांयने थे। योग्यता और आचरण के अनुसार व्यक्ति व्यक्ति की समाज में प्रतिष्ठा हुआ करती थी। अर्थात् शूद्र का बच्चा अच्छे आचार-व्यवहार के चलते ब्राह्मण कहलाने का अधिकारी था। इसके चलते कोई कार्य घृणित नहीं होता था। इसी वर्ण व्यवस्था के चलते आर्यत्व का सारे विश्व में डंका बजाता रहा, इसके प्रमाण है कि हमारे देवी-देवाताओं केनाम के साथ कोई जाति सूचक शब्द नहीं होता था यथा - ब्रम्हा, विष्णु, महेश, हनुमान, नरसिंह, राम, कृष्ण, बलराम, लक्ष्मी, सरस्वती, काली, दुर्गा, पार्वती आदि सन्तों और महापुरुषों के नाम कालिदास, कबीर, वाल्मीकि, तुलसीदास, बिहारी, भूषण, कौटिल्य, भवभूति, बाणभट्ट आदि कोई सरनेम नहीं लिखा जाता था जैसे साहू, वर्मा, शर्मा, निषाद, ठाकुर आदि।

ई. सन् ६१० में कुतुबुद्दीन ऐबक ने भारत में मुस्लिम शासन की नींव डाली, तब से आर्यों में हीन भावना विकसित हुई, तब तक आर्यों में आपसी वैमनस्यता बढ़ गई थी, मुस्लिम धर्म अपना लेने वालों ने अपने आपको आर्य कहना नहीं छोड़ा, इसलिये आर्य अपने आपको हिन्दू कहने लगे तब श्रेष्ठ वर्ण के लोगों ने कर्मानुसार वर्ण को जन्मना जाति का रू दे दिया इस तरह जातिवाद का ताण्डव शुरु हुआ। फलस्वरुप बाहर से आने वाले मुट्ठी पर मुस्लिमों ने ७०० वर्षों तक शासन किया। अंग्रेजों ने भी २०० साल राज किया, जातिवाद के चलते संवर्णों का शूर्दों के प्रति छुआछूत और हीनभावना के कारण हिन्दू समाज की फूट का पूरा लाभ मुस्लिम और ईसाई ने प्रलोभन देकर इफरात धर्मान्तरण किया जिससे शूर्दों ने हिन्दूएतर धर्मों को अपनाने में सम्मान और फायदा देखा १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम के पश्चात अंग्रेजों ने भारतीयों में आजादी की लालसा तदनुरुप संगठित होने की भावना का अनुमान लगा लिया था अतः भारतीयों में जातीय वैमनस्य को पनपाकर उन्हें तोड़े रखने के लिये अंग्रेजों ने १८७१ की जनगणना में जाति को आधार बनाया, मजहबी आधार पर अंग्रेजों ने देश के दो टुकड़े करवा ही दिए, हिन्दुओं की पांच हजार छोटी-बड़ी जातियाँ शासन को औंधा करके रखी हैं, जातिगत आरक्षण की नीति ने आग से घी का काम किया है वोटों के लालच में सभी राजनैतिक पार्टियाँ आरक्षण के कोटे में वृद्धि करने का प्रलोभन देने में जुटी है सभी जातियां चाहती हैं कि उन्हें भी आरक्षित श्रेणी में गिना जाये, जिन्हें आरक्षण है वे और ज्यादा अक्सर और सहूलियतों के लिये लालायित है एक तरफ काबिलों की उपेक्षा और अपेक्षाकृत नालायकों की शासन-प्रशासन, नौकरी, शिक्षा, रोजगार में प्राथमिकता के फलस्वरुप सभी तरफ भ्रष्टाचार और अक्षमता का दृश्य उपस्थित हो गया है। अनारक्षित जातियों ने पुरुषार्थ कर सरकार पर आश्रित न होते हुए तरक्की करने की ठान लिया है। आज भी इसीलिये ६३ वर्षों से आरक्षण का लाभ लेने

वाली जातियों के डाक्टर, इंजीनियर, वकील, सी.ए. की स्वतंत्र प्रतिस्पर्धा में नहीं के बराबर है, उद्योगति, व्यवसायी तो हैं ही नहीं क्योंकि आरक्षण के कारण उन जातियों में अकर्मण्यता और परावलम्बियां पनप चुकी है। इस आरक्षण की नीति की वजह से ५० लाख से ज्यादा भारतीय विदेशों में जाकर बस गए हैं और अपनी प्रतिभा और पुरुषार्थ से बुलंदियों को छू रहे हैं मुझे एक ऐसी जाति के बारे में पता है जो अपने आपको क्षत्रिय कहते थे लेकिन जब उनकी जाति पिछड़ा वर्ग में शामिल की गई तो सारी सुविधाओं का लाभ लेने के लिये तथाकथित क्षत्रिय दौड़ पड़े।

आजादी के नेता अधिकांशतया सवर्ण थे, उन्होने यह सोचा कि ८५ प्रतिशत शूद्रों को एक नहीं रहने देना चाहिए इसलिये आरक्षण की नीति शुरू से अपनाई गई। नेशनल असेम्बली के जमाने से आरक्षण की नीति जारी है। १९३१ में अनुसूचित जाति को तथा १९४२ में अनुसूचित जनजातियों को लोकसभा, विधानसभा चुनावों तथा नौकरियों में आरक्षण दिया जाने लगा। १९९३ में मंडल कमीशन लागू करते हुए पिछड़ा वर्ग को भी नौकरियों में आरक्षण मिलने लगा। अब यह रोग मुसलमानों को भी लगा है और उन्हें राज्य स्तर पर कहीं-कहीं आरक्षण मिलना शुरू हो गया है। अब जाति आधारित आरक्षण की देखादेखी लिंग आरक्षण का बीज भी रोपित हो गया है। राज्यसभा में ३३ प्रतिशत लोकसभा, विधानसभा सीटों पर महिलाओं के लिए आरक्षित करने का बिल पारित हो गया है और लोकसभा में भी पारित हो जायेगा। भारतवर्ष अब आरक्षण वर्ष बन गया है, जिसे आरक्षण मिला उसका सर्वनाश होगा ही। आरक्षण के इतने लम्बे कालावधि में ऊंगली में गिने जाने लायक परिवार ही लाभ उठाते रहे। सारा समाज वहीं हैं इन सबका एकमात्र इलाज है अन्तर्जातीय विवाह इससे जातिवाद अपने आप समाप्त हो जायेगा, सरकारी तुष्टीकरण का यह क्या शानदार अंदाज है कि इधर जातिवाद को उभारने के लिये आरक्षण दे रही है और उधर अन्र्तातीय विवाह करने वाले को पुरस्कार भी देती है। तुम भी खुश और हम भी खुश सारे राजनैतिक पार्टियों का कमोवेश एक ही हाल है। १९३१ की जनगणना में भी अंग्रेज और कांग्रेस दोनों जातिगत आधार के लिए असहमत थे जो अब तक जारी है अब वही कांग्रेस ने जातीय जनगणना पर सहमति जता दी है। वोट के लिए जीने वाले सारे राजनैतिक दलों ने भी परंतु लगाकर सहमति दिखाई है, जनगणना में जात गिनाकर देश को और नरक न बनाओ।

सिक्खों के गुरु गोविन्द सिंह का कहना है - मानस की जात सब एक ही पहचानबो वेदों में लिखा है माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः अर्थात् धरती हमारी माता है और मैं इसका पुत्र हूँ। हम सभी मानव तो धरती की संतान हैं तो हमारी जात अलग कहां से हुई। इसलिये हमारी जाति-मानव है।

पुरुषार्थ

आर्यावर्त्त का वैदिक गौरव, हम पुरुषार्थ से वापस लायें।
अपना जीवन यज्ञमय करके, जन-जन का हम आर्य बनायें।
ज्ञान की गंगा विकसित करके, संसार को सुखी बनायें।
शुभ कर्मों के प्रेरक अवसर, मानवता को प्राप्त करायें।
कोई न वंचित रहे खुशी से, सब आंगन मुस्कायें।
भारत के उज्जवल भविष्य को, आशाओं के गीत सुनायें।
जाति भेद की बड़ी दीवारें, आओ मिलकर तोड़ गिरायें।
निर्माण कार्य की राह देखती, लूट चली आधार शिलायें।
झूठे वायदे करने वाले, नेताओं के पास न जायें।
धनवानों को दान सिखायें, निर्धन को धनवान बनायें।
आजादी की सुख समृद्धि, जन-जन को एकसार जुटायें।
सोने डालो हुआ सबेरा, जागो भारतवर्ष जगाये।
वंचित वर्गकी पीड़ा समझें, सेवा जन हित कर दिखलायें।
स्वार्थ सिद्ध नेता से सत्ता, आओ मिलकर मुक्त करायें।
सत्ता की अधिकारी जनता को, भारत का मुकुट पहनायें।
सेवक बन बैठे हैं मालिक, इनको इनका स्थान दिखलायें।
जिनके मत से राज मिला है, मतदाता का मान बढ़ायें।

- **हरबंशलाल कपूर**, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

मार्गदर्शन जब हैं समाधान तो क्यों हैं परेशान

- डॉ. दिव्येश्वर शास्त्री,
छ.ग. आर्यवीर दल बौद्धिकाध्यक्ष

सज्जनों ! बिना कारण के कोई कार्य नहीं होता, ऐसा शास्त्रों में ऋषियों ने कहा है। इसी प्रकार बिना समस्या के किसी चीज का समाधान भी नहीं होता। आज सारे संसार में, समाज, राष्ट्र, देश, ग्राम, घर-परिवारों में अनेक समस्यायें हैं और उनके समाधान भी है किन्तु मनुष्य केवल समस्याओं में ही उलझा हुआ रहता है उन समस्याओं का समाधान ढूंढने में बहुत कम प्रयत्न करता है जिसके कारण वह हमेशा दुःखी रहता है। यदि एक-एक समस्या का निराकरण धीरे-धीरे करता जाए तो अवश्य रूपेण वह सुखी हो सकता है और समस्या हटने पर व्यक्ति को सुख शान्ति आनन्द का अनुभव होता ही है। आज समस्त आर्यजन इस समस्या से व्यथित व पीड़ित है कि भविष्य में आर्यजन (श्रेष्ठ व्यक्तियों) का निर्माण कैसे हो ? हमारे बालक बालिकायें, पुत्र-पुत्रियाँ, बहु-बेटियाँ सुसंस्कारित सुशिक्षित व धार्मिक कैसे हो ? आज के युवा वर्गों का युवतियों का नैतिक, चारित्रिक, बौद्धिक, मानसिक, आत्मिक और शारीरिक उन्नति कैसे हो ? भावी पीढ़ी सुखी, निरोगी समृद्ध (धनाढ्य) कैसे हो ? इन सब गंभीर समस्याओं का समाधान भी हमारे आर्यजगत् में अपने घर परिवार में उपलब्ध है। रही बात समस्याओं का उचित समाधान नहीं हो पा रहा है। इसमें हम स्वयं कारण है अर्थात् समाधान कारक वस्तुओं को व्यक्तियों को अपने घर-परिवार समाज देश राष्ट्र में ला नहीं पा रहे हैं।

उपर्युक्त समस्याओं का समाधान यह है कि ऋषि महर्षि द्वारा उपदिष्ट मार्ग पर यदि हम चलना प्रारम्भ कर दें तो समझ लीजिये हमारे आधे समस्याओं का समाधान यूं ही हो जायेगा। साथ साथ वेदानुकूल आचरण करने वाले 'आप्त' सत्योपदेश जितेन्द्रिय स्वाध्यायी योगाभ्यासी सच्चा ईश्वर भक्त विद्वानों को साधु संत महात्माओं को, उपदेशक भजनोपदेशकों को अपने घर-परिवार समाज व देश में बुलाकर विधिवत अपने परिजन सम्बन्धियों को, बालक-बालिकाओं, युवक-युवतियों, बुजुर्गों को उनके सत्संग में बैठायें तथा उनके मार्गदर्शन, उपदेश, प्रवचनों का श्रवण करायें तो अवश्यरूपेण बहुत कुछ परिवर्तन आ सकता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जैसे समाज सुधारकों के सिद्धान्तों को, मान्यताओं को ग्राम-ग्राम, नगर-नगर, घर-घर में सुनायें जायें, युवक-युवतियों के सर्वांगीण उन्नति के लिए बड़े-बड़े अल्पकालिक या दीर्घकालिक शिविरों का समायोजन किया जाए और महापुरुषों के आदर्शों को प्रेरक प्रसंगों को ब्रह्मचर्य पालन के लाभों को, अध्यात्मवाद के विशेषताओं को बारम्बार सुना या सुनाया जाए तो निश्चित रूपेण हम अग्रगण्य पूजनीय अनुकरणीय आस्तिक चारित्रिक व धार्मिकता के दृष्टि से सुदृढ़ हो जायेंगे और महर्षि मनु जी का कथन सार्थक हो जायेगा कि

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः ।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षरेन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ॥

किसी समय में इस देश के नर-नारियों के उत्तम चरित्रों की शिक्षा लेने के लिए सम्पूर्ण पृथिवी लोक से मनुष्य आते थे। आज भी वह दिन हमारे देश में आये उसके लिए हमें अथक प्रयत्न करनी चाहिए।

यदि हम ग्राम-ग्राम, नगर-नगर में 'आदर्श परिवार' का निर्माण किया जाय वैदिक संस्कृति, आर्य संस्कृति के मान्यताओं को अत्यन्त सरल व स्थानीय बोली भाषाओं के माध्यम से जनमानस में प्रचार-प्रसार किया जाए तो बहुत से पारिवारिक आध्यात्मिक समस्याओं का समाधान हो सकता है। आज हम नयी पीढ़ी के बालक-बालिकाओं को आध्यात्मिक वातावरण में नहीं लाते है और न ही उनको कभी उच्च कोटि के विद्वानों के सानिध्य (सत्संग) में भेजते हैं तो कहां से उनका निर्माण होगा ? कैसे उनमें सच्चरित्रता

आयेगी। अतः हमें बड़ी सजगता से ध्यान देना होगा कि ऐसे क्या-क्या उपाय करें जिससे हम धर्म, संस्कृति व देश को बचा सकें और फिर आर्यावर्त देश को विश्व गुरु के पद पर प्रतिष्ठित कर सकें। सर्वत्र आज पारिवारिक कलह बढ़ाने का कारण नैतिकता व चारित्रिकता का पतन है और हम ईश्वर से अध्यात्मवाद से दूर होते जा रहे हैं।

हमारे समाजों में घरों में त्यागी, तपस्वी, सत्यवादी, ज्ञानी-दानी व्यक्तियों का आगमन नहीं हो रहा है और उनके उपदेश मार्गदर्शन नहीं मिल पा रहा है। परिणामस्वरूप हम दोषों और क्लेशों के गर्त में गिरते जा रहे हैं, अज्ञानरूपी तमस हमें ढकती जा रही है स्वाध्याय, सत्संग, योगाभ्यास छूटता जा रहा है और पाश्चात्य संस्कृति हम पर हावी होती जा रही है। अतः हमें संकल्पित होना होगा कि हर प्रकार के समस्याओं का समाधान हम सब मिलकर पूर्ण पुरुषार्थ से करें। तभी सर्वत्र श्रेष्ठ पुरुषों का निर्माण होगा और वे श्रेष्ठजन गंभीर से गंभीर समस्याओं से बाधाओं से विचलित नहीं होंगे। पर्वत के तुल्य मुसीबतों का सामना करने के लिए डटे रहेंगे। तदर्थ प्रत्येक आर्यजन, सभासद, पदाधिकारीगण तथा स्वयं नर-नारी गण प्रयत्न करें। अर्थात् अपने देश, समाज परिवार को आदर्श बनाने के लिए स्वयं का निर्माण करें या श्रेष्ठ मानव निर्माण करने वाले आचार्यगण, वैज्ञानिक स्वरूप आदर्श विद्वानों को अपने गृह प्रांगण, ग्राम, नगर में आमंत्रित करें और उनके द्वारा निर्देशित मार्ग पर स्वयं चलें तथा अन्यों को भी उत्तम मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करें।

यदि ऐसा प्रयोग हम सब मिलकर करते हैं तो स्वामी दयानन्द जी का वह स्वप्न सार्थक होगा कि **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** अर्थात् सम्पूर्ण संसार को आर्य बनाओ। जिससे सुख-शान्ति समृद्धि की वर्षा सर्वत्र होगी।

पता : वैदिक सदनम्, पंचधार (सरिया) रायगढ़ (छ.ग.)

बोध कथा

धर्म का मर्म

एक साधु शिष्यों के साथ मेले में भ्रमण कर रहे थे। एक स्थान पर एक बाबा माला फेर रहे थे, लेकिन बार-बार आँख खोल कर देख लेते कि लोगों ने कितने पैसे दान में दिये हैं। साधु हँसे व आगे बढ़े, आगे एक पण्डित जी भागवत कह रहे थे पर उनका चेहरा यन्त्रवत था - शब्द भी भावों से कोई संगति नहीं खा रहे थे, चेलों की जमात बैठी थी। उन्हें भी देखकर साधु खिल-खिलाकर हँस पड़े। इससे आगे बढ़ने पर साधुजी को एक चिकित्सक रोगी की परिचर्या करता मिला। वह घावों को धोकर मरहम पट्टी करता जाता। अपनी मधुर वाणी से उसे बराबर सांत्वना दे रह था। यह देखकर साधु की आंखों में आंसू आ गए।

आश्रम लौटते ही शिष्यों ने पहले दो स्थानों पर हँसने व फिर रोने का कारण पूछा तो वे बोले - बेटा! पहले दो स्थान पर तो मात्र आडम्बर था पर भगवान के नाम के लिए आकुल एक ही व्यक्ति दिखा- वह चिकित्सक! उसकी सेवा भावना देखकर अन्दर से हृदय द्रवित हो उठा। न जाने कब जनमानस धर्म के सच्चे स्वरूप को समझेगा।

वैदिक साहित्य एवं औषधि बिक्री केन्द्र

वेद, उपनिषद्, दर्शनशास्त्र, मनुस्मृति, रामायण, महाभारत, शिक्षा, कल्प, व्याकरण, उच्चकोटि वैदिक साहित्य और हवन कुण्ड, हवन सामग्री, यज्ञ पात्र, ओ३म् ध्वज, मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, योगीराज भगवान श्रीकृष्ण, महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज, गुरुदत्त विद्यार्थी, लेखराम, आनन्द स्वामी आदि आर्य महापुरुषों के फोटो फ्रेम, आडियो, वीडियो सी.डी. किफायती दरों में मिलने का एकमात्र स्थान.

स्थान : सभा कार्यालय, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) फोन : 0788-2322225, 4030972

आर्यसमाज और अन्तर्जातीय विवाह-वर्त्तमान परिप्रेक्ष्य में

- ले. अर्जुनदेव चड्डा

वैचारिक

मानव-जीवन के चार स्तंभों में गृहस्थ-जीवन का द्वितीय स्थान है। अन्य तीन आश्रम भी इसी पर आश्रित हैं। यह एक उत्तरदायित्वपूर्ण आश्रम है। इसी आश्रम में रहते हुए मानव सन्तानोत्पत्ति से लेकर पालन-पोषण, शिक्षा-दीक्षा, विवाह आदि समस्त दायित्वों को पूर्ण करता है। इन दायित्वों में सबसे महत्वपूर्ण है - विवाह। यह ऐसा उत्तरदायित्व है जो दो आत्माओं के मिलन का संयोग बैठता है। न बैठ पाने के कारण अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस दायित्व के निर्वहन का जिक्र सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में किया है। उन्होने वर्णानुकूल सुन्दर लक्षणायुक्त कन्या से विवाह करने का निर्देश दिया है।

जहाँ वर्ण है वहाँ जन्मना जाति नहीं। सत्यार्थ प्रकाश बल देता है कि विवाह गुण, कर्म, स्वभावानुसार होने चाहिए। यदि इस तथ्य पर विचार किया जाए तो पता चलेगा कि आर्यसमाजेतर समाजों में विवाह को लेकर अनेक कठिनाइयों हैं। जैसे- जन्मकुंडली का मिलान, मंगला-मंगली का चक्कर, शिक्षा व रोजगार समस्या, खानपान, रहन-सहन, पारिवारिक स्थितियाँ आदि। यद्यपि आज लड़कियों का अनुपात लड़कों से कम है फिर भी लड़की वाले बहुत परेशान हैं। आर्यसमाजेत्तर लोग एक सीमित दायरे में बंधकर, जन्मपत्री मिलाकर अनमेल विवाह कर डाले हैं जिसका परिणाम होता है आजीवन संघर्ष। इस समस्या से आर्यसमाज के लोग भी नहीं बच पाते। वे भी जन्मना जाति के प्रभाव में लड़के-लड़कियों का विवाह स्वजाति में करते हैं, जिससे अनेक समस्याएँ उठ खड़ी होती है। आर्यसमाजी परिवार की लड़की आर्यसमाजेतर परिवार में जाकर पूरा पौराणिक बन जाती है यदि वह परिवार मांसाहारी है तो वह उससे भी नहीं बच पाती। उसे उसी माहौल में जीने को मजबूर होना पड़ता है। यदि आर्यसमाजी परिवार में आर्यसमाजेतर परिवार की लड़की आती है तो आर्य सिद्धान्तों व संस्कारों के अभाव के कारण समायोजन करने में कठिनाई का अनुभव करती है। इससे परिवार में संघर्ष उत्पन्न होता है।

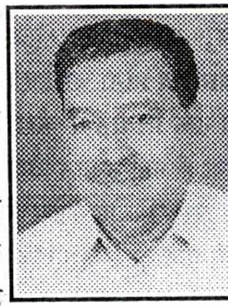

जिनके घरों में युवा लड़के या लड़कियाँ हैं उनके माता-पिता से अनेक विवाह सम्बन्धी कठिनाई का पता किया जा सकता है। लड़कियां ३५-३८-४० साल की हो जाती है अच्छे वर ढूंढने के चक्कर में उम्र समाप्त हो जाती है। यही हाल लड़कों में भी मिल जाएगा। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने स्पष्ट लिखा है कि २४ वर्ष तक कन्या का विवाह अवश्य हो जाना चाहिए।

एक तरफ ऐसा स्पष्ट निर्देश और दूसरी तरफ - उन्होने उल्लेख किया है - **'चाहे लड़का-लड़की मरणपर्यन्त कुमार रहें परन्तु असदृश अर्थात परस्पर विरुद्ध गुण, कर्म, स्वभाव वालों का विवाह कभी न होना चाहिए।'** अब लोग जाति के दायरे में सीमित रहेंगे तो निश्चित ही कठिनाईयाँ बढ़ेंगी। ऐसे में युवा-युवती का मन दूषित हो सकता है।

इस दिशा में विगत चार सालों से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा किया जा रहा युवक-युवती परिचय सम्मेलन एक सराहनीय कदम है। पांचवाँ युवक-युवती परिचय सम्मेलन दिल्ली में जुलाई के प्रथम सप्ताह में होने जा रहा है। आर्यसमाज के लोग यदि इस दिशा में सहयोग करें तो बहुत कुछ लड़के-लड़कियों के विवाह संबंधी कठिनाई दूर हो सकती है। महर्षि दयानन्द सरस्वती के शब्दों पर विचार करें- **'सज्जन लोग स्वयंबर विवाह किया करें। सो विवाह वर्णानुक्रम से करें और वर्णव्यवस्था भी गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार होनी चाहिए।'** स.क्र. ४। ऋषि के शब्दों में कितनी कल्याण भावना है। वे वर्ण व्यवस्था के कितने समर्थक है, उन्हीं के शब्दों में - **'रज वीर्य के योग से ब्राह्मण शरीर**

नहीं होता ।' । स.प्र.४ । वे लड़का-लड़की के गुण-कर्म-स्वभाव के मेल पर बल देते हैं । उन्हीं के शब्दों में - **'जब स्त्री-पुरुष विवाह करना चाहें तब विद्या, विनय, शील, रूप, आयु, बल, कुल, शरीर का परिमाण आदि यथायोग्य होना चाहिए। जब तक इनका मेल नहीं होता तब तक विवाह में कुछ भी सुख नहीं होता ।'** ।स.प्र.४। इतना ही नहीं उन्होने विवाह सम्बन्ध दूर करने पर बल दिया है। दूरस्थ विवाह में प्रेम की डोरी बढ़ी रहती है। दोनों पक्ष के लोग एक दूसरे के गुणावगुणों से अनभिज्ञ रहते हैं । महर्षि दयानन्द सरस्वती के शब्दों में -**'दूरस्थों के विवाह में दूर-दूर प्रेम की डोरी लम्बी बढ़ जाती है, निकटस्थ विवाह में नहीं ।'** । स.प्र. ४ । खानपान, जलवायु आदि की दृष्टि से भी दूरस्थ विवाह उत्तम है। महर्षि जी के ही शब्दों में - **'दूर देशस्थों के विवाह होने में उत्तमता है ।'**। स.प्र.४। हम आर्य समाज के लोग ऋषि की भावनाओं और उनकी कल्याणकामना को समझें । आज विवाह की समस्या इतनी विकट होती जा रही है जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। इसका समाधान अन्तर्जातीय विवाह से ही सम्भव है । जो गुण, कर्म, स्वभाव से गृहीत है। यदि अपनी जाति में विवाह होने पर पति-पत्नी में संघर्ष है वह अच्छा है या अन्तर्जातीय विवाह में गुण, कर्म, स्वभावानुसार सुखभोग अच्छा है ? विपरीत स्वभाव वालों में विवाह का सर्वथा निषेध है। **महर्षि दयानन्द के शब्दों में - "कन्या को मरने तक चाहे वैसी ही कुमारी रखो, परन्तु बुरे मनुष्य के साथ विवाह न करो ।"** उपदेश मंजरी ॥३॥

इस दिशा में हम आर्यसमाज के लोग सक्रिय कदम नहीं उठा पा रहे हैं व दुःख झेल रहे हैं। विरोधाभास साक्षात् देख रहे हैं। पर साहस नहीं कर पा रहे हैं। हमारा आर्यसमाज एक परिवार है। हम एक-दूसरे से भावनात्मक सम्बन्ध से जुड़े हुए हैं । केवल कथनमात्र से कुछ नहीं होता । हमारा कार्य दूसरों के लिए बहुत बड़ा उपदेश है । आचरण और कर्म की भाषा मौन उपदेश देती है, जो बहुत प्रभावकारी होती है । दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के द्वारा उठाया जा रहा यह कदम निश्चय ही भविष्य में अच्छा परिणाम देगा। रोटी और बेटी का सम्बन्ध आर्यसमाज के लिए सुखद भविष्य है । इससे हमारा दायरा विस्तृत होगा । हम एक दूसरे के निकट आएंगे । हमें सांस्कारिक लड़के-लड़कियाँ मिलेंगी । परिवार में सुख-शान्ति हो - इसके अलावा और क्या चाहिए ? हमारी जाति आर्य, हमारा धर्म-वैदिक, हमारा राष्ट्र-आर्यावर्त्त, हमारा नाम आर्य, हमारा उपास्य देव ओ३म्-यही तो हमारी पहचान है । इसे बनाना है । यदि हम लोग परस्पर लड़के-लड़कियों का विवाह करना प्रारम्भ कर दें तो देश में आमूलचूल परिवर्तन आएगा और जन्मना जाति-पाँति मिट जाएगी । इसे मिटाना अति आवश्यक है अन्यथा हम परस्पर विभक्त होते जाएंगे और हमारी राष्ट्रिय एकता खतरे में पड़ जाएगी । इसके लिए अन्तर्जातीय विवाह एक सशक्त माध्यम है ।

आर्यसमाज आर्यों का समाज है। हम अपने समाज में विवाह सम्बन्ध करें। इससे रूढ़ियाँ मिटेंगी, दिखावा समाप्त होगा, योग्य लड़के-लड़कियों का दायरा बढ़ेगा तो विवाह संबंधी समस्या स्वतः समाप्त हो जाएगी, अमीरी-गरीबी की खाई पटेगी, हमारा परिवार बड़ा होगा, अच्छे सम्बन्धों से मन में प्रसन्नता बढ़ेगी । गृहस्थ जीवन स्वर्ग के समान होगा । गुरुकुलों के आचार्य/आचार्या से निवेदन है कि वे गुरुकुल के स्नातक/स्नातिका का ऐसा सम्बन्ध बनाएं जिससे गुरुकुल के लड़के-लड़कियों का परस्पर विवाह संबंध हो सके । वे इस दिशा में मुख्य भूमिका निभा सकते हैं। विवाह में विचारों का मेल परमावश्यक है । यदि गुरुकुलीय शिक्षा प्राप्त युवक को अन्य कान्वेंट/विद्यालय से शिक्षा प्राप्त पौराणिक लड़की से विवाह होता है तो उसके जीवन में संघर्ष होगा। इसी प्रकार गुरुकुल से शिक्षा प्राप्त लड़की का विवाह यदि कान्वेंट/विद्यालय से शिक्षा प्राप्त लड़के से होगा तो उसके भी जीवन में संघर्ष होगा। कारण यह है कि गुण, कर्म, स्वभाव मेल नहीं खाता है। वैदिक विचारधारा का अधिकाधिक प्रचार-प्रसार हो, इसलिए यह विवाह सम्बन्ध वैदिक विचारों के अनुरूप होना चाहिए।

आर्यसमाज को अपना आदर्श दिखाना होगा। योग्य स्त्री-पुरुषों से योग्य आदर्श समाज बनेगा जिसका माध्यम

अन्तर्जातीय विवाह है। मेरे सामने कितने अन्तर्जातीय विवाह सम्पन्न हुए हैं और वे युवक-युवती सुखद जीवन व्यतीत कर रहे हैं और कितने ऐसे जातीय विवाह हुए हैं जिनके मध्य संघर्ष है। जन्म कुण्डली, मंगली-मंगला, राशि, ग्रह, मुहूर्त, शुभवाद, अच्छा-बुरा दिन, नाड़ी मेल सबको तिलांजलि देकर समाज के समक्ष सत्य को प्रतिष्ठापित करना होगा। यह युग की मांग है।

जिसके भी घर में विवाह योग्य लड़के-लड़कियां हैं वे परिचय सम्मेलन हेतु रजिस्ट्रेशन अवश्य करावें। इससे योग्य लड़के-लड़कियों का मिलन होगा। यदि सम्मेलन में नहीं जा सकते तो कम-से-कम बायोडाटा भेजकर वैवाहिक पुस्तिका द्वारा संपर्क स्थापित कर सकते हैं। इससे प्रतिनिधि सभा का मनोबल बढ़ेगा और आर्यसमाज एक सकारात्मक कदम की ओर अग्रसर होगा। आर्यों से निवेदन है कि वे इस दिशा में पहल करें। यह ऐतिहासिक कार्य होगा। कहने से कुछ नहीं, सिर्फ करने से होगा। यदि हम महर्षि दयानन्द के मिशन को आगे बढ़ाना चाहते हैं तो अन्तर्जातीय विवाह को स्वीकार करना होगा। इससे एक बहुत बड़ी सामाजिक क्रांति आएगी। इस क्रांतिकारी आन्दोलन में सहयोग दें। स्वामी श्रद्धानन्द के सपनों को साकार करें। विवाह को सहज, सुखद बनाएं, संघर्षमय नहीं। यह आर्यसमाज की अन्तरात्मा की पुकार है। *पता : प्रधान, जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा*

कविता

मैं तुमसे केवल कल्याण चाहता हूँ,
कृपाभरी दृष्टि का ध्यान चाहता हूँ।
जीवन की नौका कभी न डगमगाए,
आँधी, तूफान में जान चाहता हूँ।
सदा मन रंगा हो तेरे प्रेम में ही,
पल-पल में तेरा ही भान चाहता हूँ।
दुःख-दर्द-कष्ट-कठिनाईयों के दिनों में
संघर्ष हेतु बाल-कृपाण चाहता हूँ।
अंतःकरण में तेरी ज्योति जगमगाए,
ऐसा पवित्र वह ज्ञान चाहता हूँ।
शांति, सुख, सौरभ, आनन्द की लहर का,
भगवन् ! मैं तुमसे यह दान चाहता हूँ।
बुद्धि सन्मार्ग की ओर सदा प्रेरित हो,
यही तुमसे परम वरदान चाहता हूँ।
जीवन में फूलों की आए सुगंध नित,
हरा-भरा ऐसा उद्यान चाहता हूँ।

❀ ❀ ❀

ले. ओमप्रकाश आर्य,
आर्यसमाज रावतभाटा, कोटा (राज.)

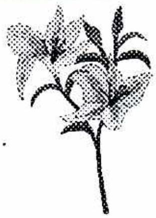

सम्मति न दीजिये

नापृष्टः कस्यचिद् ब्रूयान्न चान्यायेन पृच्छतः।
जानन्नपि हि मेधावी जड़वल्लोकमाचरेत्॥

भावार्थ - बुद्धिमान मनुष्य को चाहिए कि - वह सब कुछ जानते हुए भी बिना पूछे किसी को अपनी राय न दे। कोई व्यक्ति अन्याय से मान लीजिये आप से कुछ पूछता है, आप जड़वत् आचरण करने लग जाइये। ऐसे कि- जैसे आप उस विषय में कुछ जानते ही नहीं है। सामने वाला आपको मूर्ख समझ रहा है और आप उसके सन्मुख मूर्ख बनकर भी उपदेश देते रहें यह ठीक नहीं है।

जो आपकी सम्मति का आदर करता हो उसे ही आप अपनी शुभसम्मति दीजिए।

- सुभाषित सौरभ

सब कुछ लुटा के होश में आए तो क्या किया

प्रासंगिक

- स्वामी रामानन्द सरस्वती

दरभा घाटी का भीषण नरसंहार वो काला दिन इतिहास का एक काला पृष्ठ बन गया। बता गया कि बुद्ध गांधी महावीर के अहिंसक देश में अंगुलीमाल से भी बर्बर हत्यारों की कमी नहीं है। नक्सलवाद एक ऐसा आतंक बन गया है जिससे सभी सहमे हुए हैं माओवादी नक्सल पंथियों के इस अमानवीय कृत्य की जितनी भी निंदा हो वह कम है। क्रूरता नृशंसता और बर्बरता का इससे भयानक और क्या कृत्य हो सकता है कि लाश पर हत्यारे तांडव करें जश्न मनाएं। इस हत्याकांड की घोर निंदा होनी चाहिए। इसे राजनैतिक चश्में हटाकर संवेदना के चश्में से देखने की जरुरत है।

आज तो हर मुद्दा राजनैतिक रंग में रंग दिया जाता है, चाहे दिल्ली का बलात्कार कांड हो नृशंस हत्याकंड हो सबमें राजनेता एक दूसरे की कुर्सी छीनने का मुद्दा बना लेते हैं। मानवीय संवेदना समाप्त सी हो गई है। जिस देश में विपक्ष रचनात्मक और सहयोगात्मक सोच रखता है वह देश उन्नति के शिखर पर होता है एवं जिस देश में उद्देश्य केवल सत्ता हथियाना हो वह भी केवल अपना घर भरने के लिए वह देश पतन की ओर उन्मुख होता है। सारी नैतिकताएँ सारी मर्यादाओं का कोई भी मूल्य नहीं रह पाता। यही हो रहा है। क्षेत्र के कद्दावर नेताओं की हत्या होती है। लोकतंत्र शर्मसार हो रहा है। हमें इस घटना से सबक लेने की बजाय सत्ता की कुर्सी खोज रहे हैं लाशों पर राजनीति कर रहे हैं। हर पक्ष एक दूसरे पर आरोप लगा रहा है और आरोप भी इतने ओछे हैं कि सुनने वाला भी शर्मिंदा हो जाए।

सत्ता की कुर्सी के लिए लार टपकाने वाले लोगों के लिए यह सुनहरा अवसर होता है। किसी का बेटा जाए तो गम नहीं, कोई विधवा क्रंदन करे तो गम नहीं। इनकी कुर्सी इनको मिले बस इतनी ही तमन्ना है। लाशें जंगल में पड़ी थी लापता लोगों का पता न था, घायल अस्पताल में चीख रहे थे, इन पर मरहम देने की बजाय राजनीति शुरु हो गई। सत्ता पक्ष को हटाओ राष्ट्रपति शासन लागू करो और कुर्सी हमको दे दे हम राज करेंगे। क्योंकि हमारा शासन अश्व पति का होगा जहां इस प्रकार की घटना नहीं होगी। हंसी आती है दुःख की घड़ी में कि अपनों की लाश पर यदि कुर्सी रखी हो तो सत्ता के भूखे लोग उस पर बैठने से नहीं हिचकेंगे। ऐसा नहीं है कि नक्सलवादियों का यह पहला कांड हो या नक्सलवाद को नया हो सन् १९६७ में पश्चिम बंगाल की नक्सलवादी यह उदित हुआ एक मुद्दा लेकर एक पावन उद्देश्य लेकर उस समय किसानों का शोषण हो रहा था, संथाल के जमींदार किसानों से उनकी जमीन छीन रहे थे उनका शोषण कर रहे थे उनकी सुनने वाला कोई नहीं था तो कुछ लोगों ने संगठन बनाकर हिंसा का सहारा लिया, लेकिन धन्य है वह देश की राजनीति को और धन्य है स्वनाम, धन्य राजनीतिज्ञ जिन्होंने इसे राजनैतिक हथियार बना लिया। यह संगठन अपने मूल उद्देश्य से पीछे हटने लगा। आरंभ में लोगों को लगा कि शोषण से मुक्त कराने में यह संगठन सहायक होगा। लोगों का सहयोग व सहानुभूति पाकर यह संगठन पनपने लगा। हिंसा हमेशा निंदनीय होती है। लोगों ने जिसे पाला आज वही उनके लिए नासूर बन गए हैं। ऐसा नहीं है कि नक्सली हिंसा से पहली बार इतने लोग मारे गए हैं। हजारों की संख्या में लोगों की हत्याएँ होती रही इस संगठन की क्रूरता बढ़ती रही और यह संगठन आतंक का पर्याय बनकर रह गया जब तक आम आदमी मारे जाते रहे चाहे वह सिपाही हो या किसान मीडिया का इतना फोकस उसे नहीं मिला देश में इतनी हाय तौबा कभी न मची क्योंकि आम आदमी की जिंदगी का कोई मोल नहीं है। आज के हालात में आम आदमी वैसे भी मर रहा है, कभी महंगाई की मार से मर रहा है, कभी कर्ज के बोझ से मर रहा है। बेबस आम इंसान के लिए कैसी हमदर्दी उसे तो हर पल मर कर ही जीना है, गोली से मरा तो कौन सी बड़ी बात हो गई, उसके लिए क्या सोचना। वह तो केवल सत्ता का वोट बैंक है। भूखे-नंगे को रोटी कपड़ा दे दो खुश रहेगा।

इस समय खास लोगों की मौत हुई है व्ही.आई.पी. कहे जाने वालों की मौत हुई है इसलिए सबका फोकस इसी तरफ है। इनकी मौत से सत्ता के सौदागरों को भी मुद्दा मिला है। इसलिए इसे जितना उछाला जाए तो फायदा ही फायदा है। संजीदगी कहीं दिखती नहीं है। जितनी हाय तौबा अब मच रही है यदि शुरुआती दौर पर मचती तो शायद इतना बड़ा निर्मम हत्याकांड नहीं हो पाता। शासन के शीर्ष में बैठे लोगों को आम आदमी की सुरक्षा से क्या लेना देना क्योंकि वे तो सुरक्षित है और रहेंगे। २६ जनवरी और १५ अगस्त को काँच के बुलेट प्रूफ घेरे में रहकर देश की जनता को आश्वासन देने वालों को यह पीड़ा क्यों कर होगी।

निर्मम हत्याकांड के बाद भी आज कोई यह सोचने की पहल नहीं कर पा रहा है कि इस समस्या का हल क्या है। जांच आयोग और जाँच आज के समय में समस्या का हल नहीं है। जाँच आयोग बैठेगा रिपोर्ट आएगी और धूल फांकती रहेगी आज से पहले भी जांच आयोग बैठे जांच कमीशन की रिपोर्ट भी आई पर क्या ठोस कार्यवाही हुई यह आजतक समझ नहीं आया। आजादी के बाद न मालूम कितने कांड हुए और हो रहे हैं। जाँच आयोगों की भी कमी नहीं रही पर इससे कांड क्या रूके ? भ्रष्टाटार मिटा ? हत्याएँ रूकी ? क्या बदलाव हुआ।

बदलाव तो तब होगा जब हम संजीदा होकर इस ओर सहयोगात्मक चिंतन आरंभ करें। आज वह बात ही नहीं रही हर आदमी आज अपने फायदे की सोचता है। इस निर्मम हत्याकांड के बाद भी जांच आयोग बैठ गया है पर जांच चलते-चलते निर्दोष सरपंच की हत्या हो जाती है मृतक नेता के परिवार को धमकी भी बदस्तूर दी जाती है बड़े नेताओं को भी धमकी दी जाती है। हत्यारे पर्चे बांट रहे हैं मीडिया से रुबरू हो रहे हैं नित नई साजिश का जाल बुना जा रहा है। हत्यारे आजाद घूम रहे हैं अभी तक कोई पकड़ा नहीं गया। बयानबाजी में रोज एक दूसरे पर साजिश के आरोप जरुर लग रहे है। जिससे हत्यारे बेफिक्र हैं कि कौरव पांडव अभी आपस में लड़ रहे हैं और हस्तिनापुर के सिंहासन पर उनकी नजर है।

नक्सल प्रभावित क्षेत्र में रहने वाला आब तबका आज भी भयभीत है। दो तरफा मार झेल रहे है। नक्सली के खिलाफ हो तो नक्सली मारते हैं और नक्सली का साथ दे तो सुरक्षा कर्मी मारते हैं। क्या करे समझ से परे है। विकास के नाम पर चुनावी मौसम में प्रशासन खैरात बांटता है समस्या का हल नहीं ढूंढता। नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में आज भी न तो स्कूल है और न ही चिकित्सा व्यवस्ता, न ही बिजली न ही पानी। विकास की रोशनी तो कोसों दूर है उनसे। नक्सली इसी उपेक्षा को अपनी ढाल बनाते हैं। खनिजों का भंडार है उस क्षेत्र में परंतु उसका लाभ ग्राम वासियों को मिल नहीं रहा है। ठेकेदार जो ठेका लेता है वह शासन को भी देता है और नक्सली को भी अपनी सुरक्षा के लिए जिसकी वजह से आतंकी फल फूल रहे हैं। शासन ने आज तक कभी गंभीरता से यह प्रयास ही नहीं किया कि आधुनिकतम हथियार आखिल नक्सलवादियों को कहाँ से मिलते हैं। उनको कौन-कौन सहयोग देता है। जनता के बीच उनके जनप्रतिनिधि चुनाव के समय ही दिखे हैं। संसद में इस मुद्दे पर कभी सार्थक बहस क्यों नहीं होती ? अरब की आबादी वाले देश में मुट्ठी पर भर लोग आतंक मचा रहे हैं और आधुनिकतम शस्त्रों से लैस हमारी सेना जिस पर अरबों का खर्च जनता की गाढ़ी कमाई से हो रहा है वे क्यों बेबस है इन दुर्दांत हत्यारो से निपटने में यह भी समझ से परे हैं।

आश्चर्य का विषय है कि विकास का दम भरने वाली सरकारें गांवों में मूलभूत सुविधाएँ क्यो नहीं दे पा रही हैं। सड़कें इसलिए नहीं बन जाती क्योंकि नक्सली ऐसा करने नहीं देते। विकास इसलिए नहीं हो पा रहा है क्योंकि आतंकी नहीं चाहते। अगर देश के अंदर जनसाधारण असुरक्षित है विकास नहीं हो पा रहा है तो सैन्य बल का अर्थ क्या है। देश के अंदर आतंकी हैं तो पड़ोसी देश भी सीमाओं में उत्पात कर रहे हैं। हम बेबस क्यों है यह समझ से परे है। जनता के बीच जाकर हम ग्रामवासियों को यह विश्वास क्यों नहीं दिला पा रहे हैं कि शासन तुम्हारे साथ है देश की प्रगति हेतु तुम आगे बढ़ों। हम लोगों को आत्म निर्भर बनाने की बजाय सौगात बांटकर निकम्मा बना रहे हैं। चावल बांटने, साइकिल देने, कम ब्याज पर कर्ज बांटने से लोग आत्म निर्भर और

श्रमजीवी नहीं बनते । आदिवासी क्षेत्र जिसके विकास की बात शासन करता है वहाँ घुसकर देखें अशिक्षा और कुसंस्कारों में फंसकर लोग अपना जीवन तबाह कर रहे हैं । सरकार से मिला सस्ता चावल उन्हें सीख देता है कि पेट भरने के लिए यह बहुत है फिर मेहनत क्यों । खेती क्यों करें । आज उन क्षेत्रों में श्रमिक नहीं मिल रहे हैं । आदिवासियों को मद्यपान की छूट से शराब का चश्पा बहाता है । लोग सस्ता चांवल पाकर शराब पीकर अपने आप में मस्त रहते हैं क्या यही विकास है। प्रकृति ने उन्हें सम्पन्न बनाने के लिए वनों के माध्यम से हर्बल दिये हैं, खनिज सम्पदा की भरमार है वे अगर चाहें तो श्रमजीवी बनकर बहुत कुछ कर सकते हैं ।

आजादी के वर्षों बाद भी ऐसे क्षेत्र रेलमार्ग से जुड़े नहीं है । विकास क्यो हो रहा है यह समझ से परे हैं । कृषि के क्षेत्र में जमीने तो बहुत है पर सिंचाई के साधनों का अभाव है। बात हम उन्नत कृषि की करते हैं कैसे संभव है । हमले के बाद परिवर्तन की बात केवल निजी स्वार्थ की पूर्ति का प्रतीक है क्योंकि हर सत्ता पक्ष के कार्यकाल में यह घटना तो घटेगी ही आतंक को मिटाना ही समस्या का हल है ट्रेड सेंटर पर धावा होता है तो सजग नागरिक सत्ता परिवर्तन की बात नहीं करते ओसमा बिन लादेन को मारकर समस्या का हल ढूंढते हैं । आज यही जरुरत यहां पर भी है । पुलिस प्रशासन इतना विश्वसनीय बने की जनता को महसूस हो कि उनके रक्षक उनके साथ हैं । गांवों को सड़कों और रेल मार्ग से जोड़ा जाए। आत्मनिर्भरता का पाठ पढ़ाया जाए, शिक्षा का विकास हो, रूढ़ियों और अंधविश्वास से लोगों को तोड़ा जाए, जो देश की विनाश की सोंचे उसका समूल उन्मूलन लक्ष्य हो । तभी देश से आतंकवाद मिटेगा । सुरक्षा घेरे में चलने वाले जब बिना सुरक्षा के आम जनता से मिलें ऐसा माहौल निर्मित हो तब विकास होगा । ऐसा करेगा कौन? इस देश में बैठे नेता आतंक का हल ढूंढ रहे हैं एक जयराम जी है उनका सुझाव है कि नक्सलियों को सत्ता में आना चाहिए चुनाव लड़कर आएँ। कल आतंकवादी भी चुनाव जीतकर आएँ सत्ता पर बने यह सुझाव वास्तव में अनोखा है क्योंकि जनता को लूटना है तो सभी मिलकर क्यों न लूटें ।

टी.वी दिखा रहा है कि एक मंत्री विधायक को धमकी दे रहा है थप्पड़ दिखा रहा है मातम पुरसी का एक नया अंदाज है कब संजीदा होंगे, कब देश से आतंक मिटेगा, कब जनता अपने को सुरक्षित महसूस करेगी यह विषय आम जनता को सोचना होगा । चुनाव आ रहा है हमारा कीमती मत उसे मिले जो नेक हो यह चिंतन हमको करना है, क्योंकि आज के नेता को तो देश की फिक्र इतनी ही है जैसे किसी शायर ने कहा है -

रंज लीडर को बहुत है मगर आराम के साथ ।
कौम के गम का डिनर लेते हैं हुक्काम के साथ ॥

पता : गुरुकुल आश्रम सलखिया, जिला-रायगढ़ (छ.ग.)

प्रवेश प्रारंभ

आर्य विद्या सभा सलखिया द्वारा संचालित एवं महर्षि सांदीपनि वेद विद्या प्रतिष्ठान उज्जैन (केन्द्रीय मानव संसाधन विभाग) द्वारा अनुमोदित मान्यता प्राप्त वेद पाठशाला एवं छ.ग. शासन द्वारा मान्यता प्राप्त संस्कृत विद्यालय में प्रवेश आरंभ ।

- ★ **प्रवेश हेतु आयु ८ से १२ वर्ष (हिन्दी का ज्ञान आवश्यक)**
- ★ **छः वर्षीय पाठ्यक्रम - सस्वर कंठस्थ वेद पाठ, आर्ष ग्रन्थ, अंग्रेजी, गणित, संस्कृत, विज्ञान, कम्प्यूटर प्रशिक्षण ।**
- ★ **सुविधाएँ : सभी प्राथमिक आवश्यकताओं (भोजन, आवास, वस्त्र व साहित्य) की पूर्ति निःशुल्क प्रवेश हेतु कोई शुल्क नहीं ।**
- ★ **विशेष सुविधा :- छात्रों के प्रवेश हेतु आगमन का मार्गव्यय संस्था द्वारा वहन किया जाएगा।**

: संपर्क :

- **स्वामी रामानन्द सरस्वती**, अध्यक्ष आर्य विद्या सभा सलखिया, जिला-रायगढ़ (छ.ग.) ०९००९१३२०८८
- **प्रवीण कुमार मिश्र**, वेद अध्यापक, आर्य विद्या सभा सलखिया, जिला-रायगढ़ (छ.ग.)०८४५८८१९२२५

चिंतन

आत्मा - कैसी, कहाँ, कितनी

- ले . अजय शर्मा

गतांक से आगे

हमारी मान्यता है कि प्रत्येक सजीव में एकल, अविभाज्य, एकदेशीय, अतिसूक्ष्म आत्मा का वास होता है। इस अनुसार गुलाब के पौधे में भी एक, अविभाज्य, एकदेशीय आत्मा का निवास होना चाहिए। गुलाब की कलम काटकर किसी अन्य स्थान पर रोपने पर वहां एक अन्य पौधा प्राप्त होता है। यदि गुलाब के पौधे में एकल आत्मा भी और वह अविभाज्य थी, तो गुलाब की कलम से जो पौधा प्राप्त हुआ, उसमें आत्मा है कि नहीं।? अगर है तो क्या वह कोई नई आत्मा है या फिर मातृ पौधे की आत्मा का ही भाग। अगर इसमें आत्मा नहीं है तो क्या बगैर आत्मा के ही वह पौधा जीवित है और बढ़ रहा है।

एक जलीय पादप है हाईड्रा। हाईड्रा को लम्बाई के लम्बवत् दो भागों में काट दिया जाए तो प्रत्येक अर्धभाग पुनः विकसित होकर दो पूर्ण हाईड्रा प्रदान करते हैं। यदि हाईड्रा मे एकल अविभाज्य आत्मा थी तो हाईड्रा के काटे जाने पर उसे एक भाग में ही रह जाना चाहिए था। इस प्रकार प्राप्त होने वाले दो पूर्ण हाईड्रा में दो भिन्न-भिन्न आत्माएँ थी या मातृ हाईड्रा में उपस्थित आत्मा के दो भाग ?

पादप में पाया जाने वाला पुनरुद्भवन का यह गुण कुछ सजीवों में भी परिलक्षित होता है। केचुए को इसकी लम्बाई के लम्बवत् स्थान विशेषः काटा जाता है तो इस प्रकार प्राप्त अगले अर्धभाग में केचुए के पश्च भाग का तथा पश्च भाग में अघले अर्धभाग का विकास हो जाता है व दो पूर्ण केचुए प्राप्त होते हैं, इस प्रकार प्राप्त दो जीवित शरीरों में दो भिन्न आत्माएं होगी या फिर एक ही आत्मा के दो भाग ?

एक अन्य जीव है प्लेनेरिया (फीता कृमि) इसके लम्बाई के लम्बवत् तीन बराबर भाग कर दिए जाए तो प्रत्येक भाग पुनः विकसित होकर एक पूर्ण फीताकृमि प्रदान करता है। तारा मछली (Star fish) के शरीर से काटा गया प्रत्येक भाग विकसित होकर पूर्म तारा मछली प्रदान करता है। तारा मछली में पुनरुद्भवन का गुण सबसे अधिक प्रदर्शित होता है। पुनर्उद्भवन के उक्त सारे उदाहरण आत्मा के एकल, अविभाज्य एवं एकदेशीय मान्यताओं पर सवाल उठाते हैं।

कुमायूँ विश्वविद्यालय नैनीताल के भूतपूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. राजकुमार गुप्त ने अपने लेख में मनुष्य के जन्म को लेकर एक मूलभूत प्रश्न उठाया है। आर्य विद्वानों से निवेदन है कि इसका समाधान करने का कष्ट करें। शुक्राणु, अण्डाणु के निषेचन पश्चात् निषेचित अण्डाणु माता के गर्भाशय में स्थापित हो जाता है। इसके बाद उसका कोशिका विभाजन प्रारंभ होता है। यह कोशिका विभाजन गुणोत्तर क्रम में चलता है और भ्रूण विकसित होने लगता है। इसी समय एक वैज्ञानिक उनको निकालकर उसके कई भाग कर लेता है। एक भाग को गर्भ में प्रतिस्थापित कर देता है जबकि अन्य भागों को विशेष तापमान पर फ्रीजर में रख देता है। कुछ समय के अन्तराल पर अन्य भागों को अन्य महिलाओं या उसी महिला के गर्भाशय में प्रतिस्थापित कर देता है। यह समय अन्तराल कुछ दिन मास या वर्षों का भी हो सकता है। इस तरह जन्म लेने वाला मानव अपने मूल मानव का हूबहू प्रतिरूप होगा। सैद्धांतिक प्रश्न यह पैदा होता है कि क्या प्रथम बार जब गर्भ में निषेचित अण्डों का स्थापन हुआ उस समय आत्मा ने प्रवेश किया या नहीं ? यदि उस समय आत्मा का प्रवेश हुआ तो जब उसकी वृद्धि होने लगी तब उसको वैज्ञानिक ने विभाजन कर कुछ भाग अपने पास सुरक्षित रख लिया और जब चाहा तब उसे गर्भ में प्रतिस्थापित कर एक नये शरीर को जन्म दिला दिया। इस नवीन शरीर या शरीरों में जो आत्माएं होंगी वे क्या उसी पूर्व आत्मा का भाग होंगी या नई आत्माएं होंगीं ? अगर एक ही आत्मा का भाग मानेंगे तो यह आत्मा की अविभाजकता

वाली मान्यता का विरोध होगा। अगर यह मानेंगे कि प्रत्येक शरीर में अलग अलग आत्मा है तब यह मानना होगा कि मानवीय हस्तक्षेप ने आत्मा के शरीर प्रवेश को प्रभावित किया है। क्योंकि वह रखी हुई सामग्री को जब गर्भ में स्थापित करेगा तभी किसी आत्मा को प्रवेश हेतु घर मिलेगा।

पादप हो या जन्तु सजीवों का शरीर कोशिकाओं से मिलकर बना होता है। सबसे सरल रचना एक कोशीय जीव की होती है। इसमें सिर्फ एक कोशिका होती है। यही कोशिका विभाजित होकर संख्या बढ़ाती है। अमीबा एक कोशीय जीव का उदाहरण है। एक अमीबा के कोशिका विभाजन द्वारा दो अमीबा बनते हैं दो से चार और इसी तरह क्रम चलता है। इस एक कोशीय जीव अमीबा में आत्मा की उपस्थिति कहाँ मानी जाए ?

बहुकोशीय जीव कोशिकाओं का सम्मिलित निकाय होता है। बहुकोशीय पादप की रचना सरल होती है जबकि जन्तु की रचना जटिल होती है। जन्तुओं में उनकी आवश्यकतानुसार भिन्न-भिन्न अंग विकसित होते हैं। सजीव जन्तु में उपस्थित सारे अंग परस्पर मिलकर कार्य करते हैं। विभिन्न अंगों व तंत्रों की सामूहिक सक्रियता ही सजीव में जीवन का बोध कराती है।

जब तक हमारे शरीर के सारे अंग एक साथ सक्रिय रहते हैं। तब तक ही हम जीवित रहते है। जब कोई एक या अधिक अंग कार्य करना बंद कर देता है तो सक्रिय अंगों की यह एकता भंग हो जाती है और हमारी मृत्यु हो जाती है। मृत्यु का अर्थ है शरीर का आत्मा विहीन हो जाना।

मृत्यु उपरांत अंगदान को पुण्यकार्य माना जाता है। एक व्यक्ति अपनी मृत्यु के पूर्व अपने अंग या संपूर्ण शरीर को दान करने का घोषणा पत्र भरता है। तब उसकी मृत्यु पश्चात् अर्थात् उसके शरीर से कुछ अंगों को निकालकर उसे दूसरे सजीव शरीर में प्रतिस्थापित कर देता है। वह अंग दूसरे शरीर मे अपना कार्य करने लगता है। इसका अर्थ यह हुआ कि उस मृत घोषित देह में उपस्थित इन अंगों में कार्य करने की क्षमता थी किन्तु मृत शरीर में अंगों की यह क्षमता बेमानी थी क्योंकि उस मृत शरीर में अंगों की सक्रिय एकता समाप्त हो चुकी थी। जिस प्रकार एक चित्रकार द्वारा बनाया गया नयनाभिराम चित्र कागज पर रंगों का मिश्रण मात्र नहीं है बल्कि उस चित्र में रंगों के अलावा भी कुछ है जो उसे रंगों के मिश्रण से पृथक कर आकर्षक बनाता है। इसी प्रकार सजीव शरीर सक्रिय अंगों के समूह से अधिक कुछ है। इन अंगों की सामूहिक एकता के कारण उस सजीव में जीवन के अस्तित्व का बोध होता है। किसी एक या अधिक अंगों की निष्क्रियता के कारण एकता भंग हो जाती है और शरीर मृत कहलाता है।

पता : डी.ए.व्ही. पब्लिक स्कूल, एसईसीएल, छाल
जिला-रायगढ़ (छ.ग.) ४९६६६५

"फिर से मरा"

मेरे हिस्से नहीं थी
कोई छाँव, न कोई ठाँव
जो था वो छीन लिया गया।
मेरे हिस्से का सौभाग्य भी
मैं बस अकेला चलता रहा
चलते-चलते शरीर थका
पैंरो में छाले हुए
जीने के लाले हुए
थक-हारकर गिर गया
और मर गया
किसी ने कहा
दौड़ में प्रथम आया है
इसे सम्मान दो।
और कहकहे, तालियों
से अनावरण किया गया
मेरी मूर्ति का
मैं हैरान था
जिन्होंने सदा ठुकराया
उन्होंने मेरी मूरत को सजाया
इस खुशी भरे सदमे में
फिर से मर गया मैं।

डॉ. देवेन्द्र कुमार मिश्रा
पाटनी कालोनी, भरत नगर,
चन्दनगाँव, छिंदवाड़ा (म.प्र.) ४८०००१

क्या ईश्वर ही पार लगायेगा ???

– आचार्य आर्यनरेश,
वैदिक गवेषक

चेतना

जब से अनार्य अवैदिक युग की प्राप्ति हुई है तब से अज्ञानयुक्त गुरुओं के वाक्यों को मन्त्र समझा जाने लगा व पाखण्डी, झूठे चमत्कारों और व्रतों ने धार्मिक कहलाने वाले लोगों की बुद्धि पर असत्य का पर्दा डाल दिया। ईश्वरीय गायत्री आदि मन्त्रों का पाठ करने वाले लोग भी आज यही समझते हैं कि **'धियो यो नः प्रचोदयात्'** का पाठ करने मात्र से भगवान स्वयमेवहमारे सारे कष्टों को, उलझनों व समस्याओं को दूर कर देगा। हमें मन्त्रपाठ को छोड़ कर कुछ करने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि भगवान सर्वशक्तिमान है। यह मत भूलो कि ईश उसी का कल्याण करता है जो स्वयं भी पुरुषार्थ करता है।

यह ध्रुव सत्य है कि जो निराकार, सर्वव्यापक, सृष्टिकर्ता, वेदज्ञानदाता, चेतनशक्तिरूप प्रभु को छोड़कर किसी चौथे, सातवें परमधाम वाले एवं ब्रह्मधामी अविद्यमान की प्रार्थना करते हैं वे तो वहां न होने से सुनते ही नहीं, क्योंकि आसमान में चौथे, सातवें एवं ब्रह्मधाम आदि स्थान की विद्यमानता को विज्ञान भी नकारता है। जो सच्चे 'ओम' ईश्वर को छोड़कर उसके दिवंगत भक्तों ब्रह्मा, शिव, राम, कृष्ण व कार्तिकेय आदि की प्रार्थना में गत २-३ हजार वर्षों से संलग्न है उनकी भी प्रार्थना व्यर्थ है क्योंकि वे सुनने वाले संसार से कभी के जा चुके हैं। यदि वे सब होते तो न तो इनके हिन्दू भक्तों के सोमनाथ, अयोध्या, मथुरा व काशीनाथ आदि मुसलमानों द्वारा तोड़े जाते एवं न ही अल्लाह और गॉड को मानने वालों का अब तक अमेरिका, ईजराइल, लीबिया, सीरिया, बंगलादेश, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, इराक आदि में लाखों ईसाईयों एवं मुसलमानों का रक्त ही बहता, काश वे सच्चे 'ओम्' के भक्त बनते।

इन दोनों को छोड़ तीसरे प्रार्थना करने वाले लोगों का ईश्वर तो सच्चा व चेतन है परन्तु वे **'धियो यो नः प्रचोदयात'** का जप करते ऐसा सोचते है कि इनको तो बस प्रार्थना ही रटनी मात्र है, ये, सब कल्याण करने का कार्य ईश्वर ही करेगा। हम चाहे गोरों की चाय पीयें वा काफी गोरों की अंग्रेजी से प्यार कर अथवा पीजा से, ए.ओ. ह्यूम गोरे की बनाई कांग्रेस को वोट दें, अथवा कभी गो-राम प्रेमी पार्टी को वोट दिए बिना घर बैठे ईश स्वयं कल्याणकारी है। वह हमारी गाय और राम की वैदिक संस्कृति को बचाएगा। हम गोरी सरकार की आर्य बाहर से आए, वे गोमांस खाते थे, वेदों में जादू टोना वाले पाठ्यक्रम, जार्ज पञ्चम की स्तुति गीत जनमनगण को दिल से गाते, न्यायालयों में अंग्रेजी की गुलामी सहते, धोती, चोटी, पगड़ी व जनेऊ की उपेक्षा कर जीन्स और अर्धनग्न लिबास में रहते मात्र 'प्रचोदयात्' कहने से कांग्रेस द्वारा उत्पन्न किए मुस्लिम वोट बैंक धमाकों से स्वयं व अपने कश्मीर, असम, गोदरा, मुम्बई व डोमीनियम शिप की गुलामी व वीर सैनिकों के मान को बचा लेंगे ? पाक के सेना हमारे सैनिकों का सिर काट ले जाती है हमारे क्रिकेट व पाक प्रेमी नेता उसके प्रधानमंत्री को दावत पर बुलाते हैं।

क्या शिव जी, श्रीराम, श्रीकृष्ण, पं. चाणक्य, राणाप्रताप, छत्रपति शिवाजी, भगतसिंह, सुभाष, बिस्मिल आदि को मात्र मंत्र जाप से ही विजय मिली थी अथवा सेना द्वारा युद्ध करने से लाखों वीरों का खून बहने पर भी अपनी मूर्खता से जो आज विदेशी गोरी का राज चल रहा है उसमें एवं उन विदेशी गोरों के राज में क्या अन्तर है ? यही गोहत्या, शराब, मांस, नग्नता, व्यभिचार, अंग्रेजियत, समलैंगिकता, लिव इन रिलेशन बिना विवाह भोग, वही मुस्लिम जिहादी बम हमलों से हजारों हिन्दुओं का कत्ल, क्या देव दयानन्द, बिस्मिल, भगतसिंह, सुभाष, आजाद इसीलिए बलिदान हुए थे। आर्य पुत्रों ! प्रचोदयात् की प्रार्थना तो करो परन्तु सफलता हेतु स्वयं अंग्रेजों व मुसलमानों का चाल-चलन व खान-पान छोड़ बच्चे बच्चे तक संदेश पहुंचाओं कि इस बार गो राम हत्यारी सरकार न आने पाए।

पता: उद्गीथ साधना स्थली, डोहर (राजगढ़) सुरमौर-१७३१०१

महान राष्ट्र भक्त : बालगंगाधर तिलक

जन्म २३ जुलाई

– आचार्य भगवानदेव चैतन्य

राष्ट्र पुरुष

यूँ तो भारत वर्ष के इतिहास में अनेकों महापुरुषों ने जन्मलिया है मगर उनमें से कुछ एक समाज की समूची धारा को ही बदलने की प्रतिभा और साहस रखते थे। बालगंगाधर तिलक जी ऐसे ही अद्भुत महापुरुषों में से एक थे। इनका **जन्म २३ जुलाई १८५६** को महाराष्ट्र के रत्नागिरि नामक स्थान के छोटे से गांव चिखलगांव में हुआ। **इनके पिता गंगाधर रामचन्द्र तिलक साधारण से शिक्षक थे मगर वे संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे।** बचपन से ही पिता के संस्कारों का प्रभाव तिलक जी पर भी पड़ा। ये अपने जीवन से ही अद्भुत प्रतिभा के मालिक थे। ये अत्यधिक निडर तथा साहसिक प्रवृत्ति के थे। अन्याय और अत्याचार इन्हें बिल्कुल भी सहन नहीं होता था। यही कारण है कि एक बार जब इनके अध्यापक ने इन्हें अकारण दण्ड दिया तो इन्होंने उसका प्रतिरोध करते हुए कहा - "जब मैंने अपराध ही नहीं किया तो मैं क्यों दण्ड पाऊँ।" तिलक की इस निर्भीकता को देखकर अध्यापक न केवल दंग रह गया था बल्कि उन्हें इस बात का भी अहसास हो गया था कि वह बालक आगे चलकर अवश्य कोई महान कार्य करेगा। अपने दादा से जब ये नाना साहब, तात्या टोपे तथा महारानी झांसी आदि क्रांतिवीरों की गाथाएँ सुनते थे तो ये बहुत उत्तेजित हो जाया करते थे। मात्र चौदह वर्ष की आयु में ही आपका विवाह सत्याभामा जी के साथ कर दिया गया था। उन्होंने १८७६ में बी.ए. तथा सन् १८७९ में एल.एल.बी. की परीक्षा उत्तीर्ण की। कानून स्नातक होने के बाद इन्होंने अपनी प्रतिभा के चमत्कार दिखाना आरंभ किए। इन्होंने पूना के न्यू इंगलिश स्कूल, डक्कन एजूकेशन सोसायटी तथा फर्ग्यूसन कालेज की व्यवस्था अपने हाथों में लेकर शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी कार्य किया। आगे चलकर इन्होंने ही कांग्रेस में कुछ जुझारूपन पैदा किया अन्यथा उनसे पूर्व स्वतंत्रता की मांग मानों एक औपचारिकता भर ही थी। उस मांग में अधिकार के स्थान पर गिड़गिड़ाहट और किसी याचक जैसी प्रवृत्ति लगती थी। इसके विपरीत उन्होंने अपने पत्र 'केसरी' में लिखा - 'भारत में अंग्रेजी नौकरशाही से अनुनय विनय करके हम कुछ नहीं पा सकते। ऐसे प्रयास करते रहना तो पत्थर पर सिर टकराने के समान है।' इसलिए उन्होंने साफ शब्दों में कहा - "**स्वाराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और इसे हम लेकर रहेंगे।**" उस समय इस प्रकार की सिंह गर्जना करने वाले वे एकमात्र महापुरुष थे। उनके इस उद्घोष से स्वतंत्रता प्राप्ति की दिशा में लोगों में एक नए जोश खरोश की भावना पैदा हुई। उनकी इस प्रखरता के कारण उन्हें कुछ लोगों ने एक्टीमिस्ट तक की संज्ञा दी मगर यह एक ध्रुव सत्य है कि उनके साहसिक व्यक्तित्व के कारण ही गर्म दल का उदय हुआ। बाल, लाल और पाल की तिकड़ी ने क्रांति की मशाल को प्रखरता के साथ प्रज्वलित किया। इन्हीं के सक्रिय प्रयासों से ही भारतवर्ष को स्वतंत्रता प्राप्त हो सकी। भारत के लोगों के जनमानस में स्वतंत्रता की ललक पैदा करने के लिए इन्होंने 'केसरी' तथा अंगेजी 'मराठा' नामक पत्र निकाले। इनके सम्पादकीय वास्तव में ही जनमानस को उद्वेलित करने वाले होते थे। तिलक जी के इन प्रयासों से सरकार तिलमिला उठी तथा इनके विरुद्ध अशान्ति पैदा करने, कानून भंग करने और जनता को भड़काने के आरोप लगाकर इन्हें ड़ेढ़ वर्ष के कठोर कारावास का दण्ड दिया। लाल, बाल पाल की टोली उस समय क्रांति के पर्याय माने जाते थे। यदि भारत को तिलक जी का व्यक्तित्व न मिलता तो संभवतः इतनी जल्दी स्वतंत्रता का सपना साकार न हो पाता।

तिलक के अनुसार स्वराज्य प्राप्ति के अधिकार की भावना उन्हें महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश से मिली। महर्षि जी की इस भावना को

व्यावहारिक रूप देने के लिए ये जिस समर्पण तथा प्रखरता के साथ कार्यक्षेत्र में उतरे वह अपने आप में एक मिसाल ही है। स्वाराज्य को जन्मसिद्ध अधिकार घोषित करके उन्होंने नवयुवकों के रक्त में एक नया संस्कार पैदा कर दिया जो निरन्तर उग्रता धारण करता चला गया। उनके व्यक्तित्व से प्रेरित होकर कितने ही युवक भारत माता की बलिदेवी पर अपना सर्वस्व आहुत करने के लिए अग्रसर हो गए। उनके व्यक्तित्व की इस प्रखरता ने ही उन्हें भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अमर कर दिया। सन् १८९७ में तिलक जी मुम्बई विधान परिषद के सदस्य चुने गये और उन्होंने बहुत ही निडरतापूर्वक सरकार के कार्यकलापों की आलोचना की। भारतीय जनमानस को संगठित करने के लिए उन्होने महाराष्ट्र में गणेशोत्सव की परम्परा चलाई जो आज भी प्रचलित है। इसी बीच महाराष्ट्र में अकाल तथा पूना में प्लेग से पीड़ित आम जनता की उपेक्षा के भाव को देखते हुए दो युवकों ने पूना के प्लेग कमिश्नर रैड तथा एक और अंग्रेज अधिकारी की हत्या कर दी। तिलक जी का इस हत्या से हालांकि कोई सम्बन्ध नहीं था मगर अंग्रेज सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया तथा १८ महीने का कठोर कारावास दे दिया। इसके बाद सन् १९०८ में सरकार ने उन पर राजद्रोह का मुकदमा बनाकर माण्डले जेल भेज दिया। उस समय उनकी आयु ५२ वर्ष की थी। जून १९१४ को इन्हें कालापानी से रिहा किया गया। इस दौरान ही इनकी धर्मपत्नी सत्यभामा जी का भी निधन हो गया। उस समय तिलक जी ने मार्मिक शब्दों में कंहा था कि वे देश की दुर्दशा पर इतने रो चुके हैं कि अपनी जीवन संगिनी की मृत्यु पर रोने के लिए उनके पास आंसू ही नहीं बचे हैं। तिलक जी सिद्धहस्त लेखक थे। कालापानी की कारावास में इनके द्वारा लिखी गई 'गीता रहस्य' अपने आप में अद्भुत ग्रन्थ है। इसके अतिरिक्त उन्होने **'ओरियन'** और **'द आर्कटिक होम इन द वेदाज'** की भी रचना की।

व्यक्ति के कर्म ही उसकी सच्ची पहचान हुआ करती है, बाहरी वेशभूषा या शारीरिक बनावट से नहीं। सेठ गोविन्ददास जी ने जब उन्हें सर्वप्रथम देखा तो उनके साधारण व्यक्तित्व के बारे में वे लिखते हैं- गेहूंआ, रंग, न ठिगना और न ऊंचा तथा न दुबला और न मोटा शरीर, देखने में जरा भी आकर्षक नहीं। सिर पर मराठी पगड़ी, ऊपर के शरीर पर मराठी ढंग का अंगरखा और उस पर दुपट्टा। अंगरखे के नीचे धोती और पैरों में मराठी ढंग के लाल चप्पल। जिस प्रकार सूरत सीरत अनाकर्षक उसी प्रकार वेशभूषा भी इस प्रकार के साधारण व्यक्तित्व के व्यक्ति ने अपने ओजस्वी विचारों और शेरदिली के कारण जननायक के पद को सुशोभित किया। जननायक भी साधारण नहीं बल्कि विनोबा जी ने उन्हें अप्रतिम जननायक से सम्बोधित किया था। एक स्थान पर वे लिखते हैं तिलक के विषय में जब मैं कुछ कहने लगता हूँ तो मुंह से शब्द निकलना कठिन हो जाता है। गद्गद हो उठता हूँ। साधु सन्तों का नाम लेते ही मेरी जो स्थिति होती है, वही इस नाम से भी होती है। मानों उनके स्मरण में ही यह शक्ति संचित है। तिलक जातितः ब्राह्मण थे, लेकिन जो ब्राह्मण नहीं है, वे भी उनका स्मरण कर रहे हैं। तिलक महाराष्ट्र के मराठे थे लेकिन पंजाब के पंजाबी और बंगाल के बंगाली भी उन्हें पूज्य मानते हैं। हिन्दुस्तान तिलक का ब्राह्मणत्व और उनका मराठापन, सब कुछ भूल गया है। यह चमत्कार है... इसमें रहस्य है...इस रहस्य में तिलक का गुण तो है ही लेकिन हमारे पूर्वजों की कमाई का भी गुण है। जनता का एक गुण और तिलक का एक गुण, दोनों के प्रभाव से यह चमत्कार हुआ कि ब्राह्मण और महाराष्ट्रीय तिलक सारे भारत में सभी जातियों द्वारा पूजे जाते हैं ...उन्होंने श्रीराम तथा महामुनि वशिष्ठ, शिवाजी आदि के साथ उनकी तुलना करते हुए कहा है कि अपने महान कृत्यों के कारण व्यक्ति अपने नाम को ऐसी सार्थकता प्रदान करता है कि दूसरों के लिए वह नाम प्रेरणा स्त्रोत बन जाता है। उनकी आस्था है कि सैकड़ों वर्षों के बाद भी तिलक का नाम ही पवित्र माना जाएगा...इतिहास के आकाश में उनका नाम तारे के समान चमकता रहेगा। राष्ट्र-धर्म व देश प्रेम के दीवाने माँ भारती के यशस्वी पुत्र लोकमान्य बालगंगाधर तिलक की जन्म दिन के पुण्य अवसर पर उनके श्रीचरणों में विनम्र श्रद्धाजंलि अर्पित है। आज आवश्यकता है तिलक की तरह मातृभूमि के प्रति अटूट निष्ठा की जिससे हम फिर से इस देश के नवनिर्माण में कुछ योगदान कर सके।

पता - ८१/एस-४, सुन्दरनगर, कालोनी, जि.-मंडी, हि. प्रदेश

बलिदान स्मरण

अमर शहीद - चन्द्रशेखर आजाद

जयन्ती २३ जुलाई

- लोचन शास्त्री

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले।
वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा।

भारत माँ को विदेशी सरकार की दासता की जंजीरों से मुक्त करने के लिए तथा देश में शोषण और अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए हमारे राष्ट्र के अनेक क्रान्तिकारियों ने एक लम्बे समय तक सशस्त्र क्रान्तिकारी आंदोलन चलाया था। वे अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध अपना सर्वस्व न्योछावर कर जंगे- आजादी की लड़ाई में कूद पड़े थे और इन तमाम संघर्षों का उद्देश्य था - देश की आजादी। ये नौजवान अपने उद्देश्यों के प्रति इतने सजग और समर्पित थे कि किसी सरकार की यातना भी उन्हें अपने ध्येय से विचलित न कर सकी। वे फाँसी के तख्ते पर चढ़ गए, गोलियों के शिकार हुए तथा दीर्घकाल तक जेलों में नारकीय यातनाएँ सहते रहे, तथापि टूटे नहीं, झुके नहीं। सर पर कफन बांधे बड़ी बहादुरी से ये लड़े और देश के लिए शहीद हो गए। देश की खातिर पहले कौन शहीद हो, वे इस बात के लिए अवश्य लड़ते थे। हर मुसीबत में अपने क्रान्तिकारी साथियों को बचाते हुए आगे बढ़कर मौत को ललकारने वाले इन क्रान्तिकारी शहीदों में एक लोकप्रिय नाम है - आतमयाजी चन्द्रशेखर आजाद।

चन्द्रशेखर आजाद का जन्म **२३ जुलाई १९०६** तद्नुसार सावन सुदी दूज दिन सोमवार को मध्यप्रदेश में अलीराजपुर रियासत के भावरा ग्राम में हुआ था। उनके पिता का नाम पं. सीताराम तिवारी और माता का नाम श्रीमती जगरानी देवी था। आजाद का जन्म घोर विपन्नता के बीच हुआ था। आजाद के पितामह मूलतः कानपुर के निवासी थे। चपन से ही पढ़ने-लिखने के बजाय तीर-कमान या बन्दूक चलाने में आजाद की अत्याधिक रुचि थी। आजाद विद्या के केन्द्र काशी में पहुंच गये। वहां काशी विद्यापीठ में भर्ती हो गए और संस्कृत का अध्ययन करने लगे। वहां रह कर 'लघुकौमुदी' और 'अमर कोष' रट लिए। पढ़ाई के अतिरिक्त उनमें राष्ट्रीय प्रेम भी जागृत होने लगा। आजाद पढ़ाई की अपेक्षा क्रान्तिकारी साहित्य और क्रान्तिकारी संगठन में सम्मिलित होने के लिए अधिक प्रयत्नशील रहा करते थे। वास्तव में वे सोचते रहते थे - 'कोड़े खाकर अथवा महात्मा गांधी जी की जय बोलकर देश आजाद हो सकता है ? आजाद ने अब क्रान्ति पर कुछ सोचना समझना और पढ़ना आरम्भ कर दिया। उनकी भावना और विचारों में एक नया मोड़ आया कि क्रान्ति द्वारा ही देश स्वतन्त्र हो सकता है। उनके हृदय में तो देश के बन्धन काटने के लिए कुछ कर दिखाने की ज्वाला धधक रही थी, वे स्कूल की सीमा में अपने को कैसे कैद कर लेते ? वे पढ़ाई छोड़कर सशस्त्र क्रान्ति का आयोजन करने वाले किसी गुप्त क्रान्तिकारी संघ की खोज करने लगे। वे आगे चलकर भारतीय प्रजातन्त्र संघ के सदस्य और सेनापति बने।

इन्हीं दिनों महात्मा गांधी का असहयोग आन्दोलन चला और इसका प्रभाव बनारस विद्यापीठ में पढ़ रहे छात्रों पर भी पड़ा। छात्रों ने जुलूस निकाला। झण्डा आजाद के हाथ में था। इसका परिणाम यह हुआ कि वे गिरफ्तार कर लिए गए और मजिस्ट्रेट ने १५ वर्षीय आजाद से पूछा - ''तुम्हारा नाम'' ? - ''आजाद''। ''पिता का नाम'' ? - ''स्वाधीनता''। ''घर'' ? - ''जेल''।

चन्द्रशेखर आजाद ने बैंत खाकर यह बता दिया कि देश की आजादी के लिए युवक बड़ी से बड़ी दारुण यातना भी हंसते-हंसते झेल सकते हैं। मजिस्ट्रेट के आदेशानुसार जब जेल में आजाद की पीठ पर बैंत मारे गये थे तब उनके पीठ की खाल तक उड़ गई थी और पीठ का मांस दीखने लगा था। इतने पर भी आजाद के माथे पर जरा भी शिकन नहीं पड़ी थी। कोड़े के प्रत्येक प्रहार पर वे 'वंदेमातरम्', 'महात्मा गांधी की जय' - 'भारत माता की जय' का उद्घोष करते रहे। उनके इस पराक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा घर-घर में होने लगी। लोग उन्हें श्रद्धा तथा आदर के भाव से देखते थे और उनके दर्शनों के लिए लालायित रहते थे। सम्पूर्णानन्द द्वारा सम्पादित 'मर्यादा' पत्रिका में 'वीर बालक आजाद' के नाम से लेख प्रकाशित हुआ। इसी समय से उनका नाम 'आजाद' पड़ गया। आजाद उस समय निर्भीकता और उत्साह के साथ कहा करते थे- ''**मैं जीवन के अंतिम सांस तक अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ता रहूंगा।**'' उनका लोकप्रिय नारा था-

दुश्मन की गोलियों का हम सामना करेंगे।
आजाद ही रहे हम आजाद ही रहेंगे।।

अनुभव दर्पण

नवोन्मेष-देवमेधा+पितृमेधा

(आर्य अनुभव कोश)

अग्निहोत्र के अन्त में सर्वज्ञ, सर्वव्यापक सर्वशक्तिमान, परमात्मा से सभी याज्ञिक प्रार्थना करते हैं कि जिस मेधा (ऋषि, विद्वान, पितृगण जो भी अपने मस्तिष्क और हृदय में धारण करते हैं उस करण, उपकरण या मस्तिष्कीय पात्र का नाम मेधा है) की रक्षा उपासना, सेवन, प्रयोग, उपयोग विद्वान् लोग, पितृगण (माता-पिता, पितामह (दादा) करते हैं, उस मेधा से आज ही मुझे मेधावी बनाएँ। यहाँ 'मेधा' दो प्रकार की बताई गई है एक स्वमेधा और दूसरी देवमेधा+पितृमेधा। स्वमेधा से संसार सागर के पार जाना संभव नहीं। अतः पूर्वजों की मेधा का संग्रह करना चाहिए। जब तक पूर्वजों की मेधा से मेधावी नहीं हो जाते। पूर्व के ऋषियों, विद्वानों, वैज्ञानिकों, अध्यापकों, पितरों, अनुभवियों, मार्गदर्शकों के मेधा से उत्तर के ऋषि, विद्वान्, अध्यापक, पितृगण छात्र और सन्तान मेधावी बनें हैं। जैसे स्वामी पूर्णानन्द, महर्षि दयानन्द ने ऋषियों और स्वामी विरजानन्द सरस्वती की मेधा से स्वयं को मेधावी बनाया था। यह मेधा ही ऋषि-ऋण के रूप में प्राप्त होती है। यदि मेधा ग्रहण करने की कला में मनुष्य कौशल प्राप्त करले तो वह परम मेधावी बन सकता है। इस उच्च लक्ष्य का प्रारम्भिक सोपान समीपस्थ देव, पितर आदि ही होते हैं। इस पृष्ठ में साक्षात्कार द्वारा प्राप्त मेधा का संग्रह किया जाएगा अतः इसे देवमेधा-पितृमेधा पृष्ठ नाम दिया गया है।

जिनके दादा जी ने 'बहराइच' उ.प्र. में महर्षि दयानन्द का सत्सङ्ग लाभ किया था और अपने पिताजी की ताड़ना झेलकर भी आर्यत्व का गर्व बनाए रखा। ऐसे आर्य परिवार की देवी ***श्रीमती संतोषप्रभा भगोलीवाल*** *(नेहरुनगर पश्चिम, भिलाई) से साक्षात्कार।*

प्रश्न : आप आर्यसमाज से कैसे प्रभावित हुई ?

उत्तर : हमारे दादा जी से लेकर अभी तक आर्यसमाज से प्रभावित है। हमारे दादाजी 'बहराइच' से डी.ए.व्ही. कालेज लाहौर पढ़ने गए। वहां से आकर सबसे अलग विशेष जीवन आरम्भ किया। इस दौरान अपने पिताजी एवं समाज के लोगों से बहुत तर्क-वितर्क भी हुआ, परन्तु उनके विचारों में अडिग रहे। हमारे पिताजी जन्म से उनके विचारों के अनुकूल थे और मैं पिताजी के आर्य विचारों को समझकर प्रभावित हुई।

प्रश्न : आर्यसमाज सेक्टर-६ भिलाई से कैसे जुड़ी?

उत्तर : जब तक आर्यसमाज का भवन निर्मित नहीं हुआ था तब तक अनेक घरों में आर्यसमाज का सत्सङ्ग होता था। बहुत दिनों तक हमारे घर में चलता था। बाद में पूज्य स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी की प्रेरणा एवं आर्यजनों के संकल्पों एवं प्रयासों से भवन का निर्माण हुआ।

प्रश्न : आर्यसमाज की गतिविधियों में आपके समय का विनियोजन कैसे होता है ?

उत्तर : प्रातः कालीन संध्या एवं पर्व उत्सवों में घर में हवन, आर्यसमाज के सत्सङ्गों में जाना, मैं वर्तमान में वेदप्रचार अधिष्ठाता के पद पर हूँ तथा आर्यसमाज भिलाई सेक्टर ६ में दो वर्ष प्रधाना रही।

प्रश्न : संतानों में वैचारिक संक्रमण किस प्रकार है।

उत्तर : पुत्रों एवं पुत्रवधू की अपेक्षा हमारी पुत्री श्रीमती ज्योति पुरंग (पत्नी श्री अवनीभूषण पुरंग) तो पूर्ण आर्यसमाज से प्रभावित रही। प्रयास यही है कि हमारी संतानें आर्यसमाज को जाने, माने एवं लाभ उठायें।

-माणवकः

आरोग्य जगत्

होमियोपैथी चिकित्सा विज्ञान और मानव जीवन शैली

- डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी

(होमियोपैथिक चिकित्सक)

त्रिवेदी होमियो औषधालय, टाटीबन्ध रायपुर (छ.ग.)

मोबा. : ९८२६५११९८३, ९४२५५१५३३६

पूरे संसार में अनेकों चिकित्सा पद्धतियाँ प्रचलित है, परन्तु होमियोपैथ की अपनी अलग पहचान है। सभी पद्धतियों की दवाईयों के परीक्षणों का आधार चूहे, बंदर, मेढक जैसे अनेक रोगी जानवर होते हैं। लेकिन होमियोपैथ की औषधियों का सफल परीक्षण स्वस्थ मानव शरीर पर होता है। यह पूर्ण सत्य है कि होमियोपैथी औषधियों का असर धीरे-धीरे होता है, लेकिन रोगी को पूर्ण रुपेण रोग को जड़ से नष्ट करने की अचूक चिकित्सा पद्धति है।

प्रकृति और मानव जीवन :-

वेदों में सूर्य को विश्व का प्राण कहकर उपासना की गई है। इसकी प्रखर किरणों के आगे धरती तपती है, लू की लपटें चलती है, पसीना छूटने लगता है। प्यास के मारे संसार छटपटाने लगता है। क्या यह अंतरिक्ष का प्रभाव मानव शरीर पर नहीं पड़ता ?

क्या कारण है कि मनुष्य इन प्रहारों के शिकार हो जाते हैं और कुछ नहीं। सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती हुए धरती की धुरी को थोड़ा सा झुकाव देते ही इसके भिन्न-भिन्न भू-भागों की कायापलट हो जाती है। वर्षा आगमन की सूचना नगाड़े बजाता हुआ आषाढ़ आता है, कुछ मनुष्यों को जोड़ों और मांसपेशियों में दर्द कराहना आदि रोग बढ़ जाते हैं, हिमालय पर जब हिमपात होता है तो बर्फ की ठंडी हवायें चलने लगती है। कई लोग इसे सहन नहीं कर पाते नाक बहने लगती है, छीकने लगते हैं, वायु मंडल में जलतत्व की कमी और वृद्धि अलग-अलग शरीरों पर अलग-अलग प्रभाव क्यों ?

क्या कारण है कि कुछ लोगों के लिए एक सुखद स्थिति होती है तो दसरे के लिये अत्यंत दुःख को जाती है ?

होमियोपैथी रोग निदान और उसकी सही तस्वीर खींचने के लिए इन प्रभावों को सर्वप्रथम स्थान देती है। मनुष्य केवल भौतिक शरीर नहीं एक सचेतन प्राणी है, वह भी एक अखिल ब्रह्माण्ड का एक अंग है, अतः देशकाल की परिधियों से वह कैसे अछूता रह सकता है ? भौगोलिक परिस्थितियाँ भी उसके जीवन को प्रभावित करती है।

मानव जीवन है जोउत्तरी ध्रुव हिमाच्छादित मैदानों पर दिखाई देता है, दूसरा है अंतहीन रेगिस्तान पर ऊंट के काफिले के साथ सफर करता हुआ एक मरुभूमि का यात्री है। ये विभिन्न परिस्थितियाँ मानव जीवन को उसके अंग प्रत्यंग को किस प्रकार प्रभावित करती है, यह विचार होमियोपैथी की माडेलिटी को जन्म देता है, माडेलिटी सारे शरीर पर असर करती है। अतः ठण्डी और गरम प्रवृत्ति का निराकरण परम आवश्यक है। इसी चिंतन धारा को सर्वोच्च स्थान देने वाला जो चिकित्सा विज्ञान है वह होमियोपैथी ही है। होमियोपैथी पूर्णरूपेण एक प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति है। जो हमारे तन-मन, प्राण और जीवन से जुड़ी है।

मानव जीवन पर प्रकृति का प्रभाव :-

अंतरिक्ष का प्रभाव, सूर्य चंद्र किरणों का प्रभाव ऋतुओं का प्रभाव, सामाजिक प्रभाव, ठंड और गर्मी का प्रभाव भिन्न-भिन्न परिस्थितियाँ से व्यक्तिगत मनोभावों पर पड़ने वाला प्रभाव है। इन सब प्रभावों की मनुष्य के मन पर निरन्तर प्रतिक्रिया होती रहती है, यही हमारा जीवन है।

अतः होमियोपैथी वर्तमान का और भविष्य में आने वाले चिकित्सा विज्ञान का एक महत्वपूर्ण अंग है।

प्रकृति के अनुसार दी जाने वाली औषधियाँ :-

मटेरिया मेडिकाएं इन परीक्षित द्रव्यों के गुण धर्मों से भरी पड़ी है -

१. **बरसात में सीलन भरी ठंडी हवाओं से रोग होने**

पर दी जाने वाली औषधियाँ - रसटाक्स, रोडेन्ट्रोन, डल्कामारा, नेट्रमसल्फ, एमोनियमकार्व, फाइटटोलिका।

२. **ठंडी के मौसम में कड़कड़ाती सर्दी के रोग होने पर औषधियाँ** - एकोनाईट, कास्टिकम, नक्सवोमिक आदि।

३. **बसंत ऋतु में रोग होने पर दी जाने वाली औषधियां** - अरेलिया रेसीमोसा, ब्रायोनिया, पल्सटिला, इपिकाक।

४. **गर्मी के मौसम में तपते सूरज की गर्मी और लू की लपटों से बचाव के लिए औषधियां** - एकोनाईट, ग्लोनाईन, नेट्रमकार्ब आदि।

५. **चांदनी रात में नाचने गाने वाले कविताएं रचने वालों के लिए औषधि** - एंटिमक्रूड उपयोगी है।

६. **नव वधू के लिए औषधि** - स्टैफीसेग्रिया। घर के कलह से परेशान सास बहू के लिए - नेट्रमम्योर औषधि।

७. **जिन व्यक्तियों का स्थानांतरण हो जाता है और नयी जगह जाते हैं अपने आपको व्यवस्थित करने में मानसिक पीड़ा झेलनी पड़ती है इसके लिए** - वालनट औषधि उपयोगी है।

सपनों का प्रभाव :-

हम अपने जीवन का एक तिहाई भाग सपनों और नींद में व्यतीत करते हैं। अतः जीवन के इस महत्वपूर्ण भाग की उपेक्षा कैसे की जा सकती है।

सपनों की तीन अवस्थाएँ होती है - जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति अवस्था। होमियोपैथी ही है जो इन अवस्थाओं को अपने चिकित्सा विज्ञान में महत्वपूर्ण स्थान देती है। सांपों के सपने आने पर - लैककेनियम औषधि। हवा में उड़ने वाले सपने आने पर - एपिस औषधि।

होमियो औषधियाँ :-

समुद्र की अतल गहराई से बनी औषधि नेट्रमम्योर - सीपिया से लेकर अंतरिक्ष में उड़ान भरने की क्षमता, चंद्र किरणों से बनी औषधि - लूना-एक्सरे, रेडियम। इस प्रकार होमियो औषधियों के विपुल भंडार जल-थल और नभ में फैले हुए हैं, ये अटूट है। यही कारण है कि होमियो औषधि रोग को समूल नष्ट करती है।

जटिल रोग :-

जैसे पथरी, गर्भ नहीं ठहरना, पोलियो, भगन्दर, पीलिया, मलेरिया, लकवा, गनेरिया, कमर दर्द, स्लिपडिस्क, साइनस, दमा, हिस्टीरिया, मधुमेह, रक्तचाप, कैंसर, मुंह, गला, स्तनों में, पेट में, आंतों में, मलद्वार में, यूट्रस आदि में। होमियो औषधियाँ अधिक प्रभावी सिद्ध हुई है। जटिल से जटिल रोगों को होमियोपैथी औषधि ठीक करने की क्षमता रखती है।

शराब से मुक्त

पढ़ने जाता शौक से, याद किया नित पाठ।
अच्छा पद रुतबा मिला, गहरे हो गये ठाठ॥

❀

संगत सज्जन की करी, मिला धर्म का ज्ञान।
सुख सम्पत बढ़ते हैं, पग-पग पर सम्मान॥

❀❀

सेवा दुर्बल दीन की, करता पर उपकार।
धरती पर मिल गया, उसे स्वर्ग का द्वार॥

❀❀❀

गहरी नदियाँ भोग की, डूब रहा संसार।
संयम निज को बचा, करे अन्य को पार॥

❀❀❀❀

ऐसे जीवन मुक्त का, घर घर हो सम्मान।
माता-पिता कुल धन्य है, या ऐसी संतान॥

❀❀❀❀❀

पति पत्नी सुख से रहे, बने प्रभु के दास।
जैसे इस घर में हुआ, सब देवों का वास॥

❀❀❀❀❀❀

सुख से जीवन जी लिया, भोग लिया संसार।
अपना फर्ज निभा दिया, मिला मोक्ष अधिकार॥

❀

समाचार प्रवाह

विचारों में लाया परिवर्त्तन वैचारिक क्रान्ति शिविर ने

दुर्ग (छ.ग.) छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली द्वारा वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़ में आयोजित वैचारिक क्रान्ति शिविर के तर्ज पर प्रान्तीय स्तर का वैचारिक क्रान्ति शिविर का आयोजन आर्यसमाज सेक्टर ६ भिलाई किया गया। यद्यपि इस शिविर में छत्तीसगढ़ के शतान्तर्गत आर्यसमाजों के प्रधान, मंत्री, कोषाध्यक्ष एवं पुस्तकाध्यक्ष विशेष आहूत किए गए थे। तथापि विशिष्ट आर्यजन विद्वजजन भी इस शिविर में संमिलित हुए। यह शिविर १ जून से ५ जून २०१३ तक आयोजित था एवं पूर्णतः आवासीय था। शिविर में १५० के लगभग शिविरार्थी तथा शताधिक दर्शनार्थी उपस्थित हए। ३१ मई २०१३ के सायं ५ बजे से पंजीयन आरम्भ हो गया था।

इस शिविर में वैदिक प्रवक्ता मुख्य वक्ता आचार्य सत्यव्रत (आर्ष गुरुकुल सुन्दरपुर, जि. रोहतक हरियाणा) थे। उन्होने आर्य दैनिक कृत्य संध्या और यज्ञ के संबंध में प्रतिदिन व्याख्यान दिया और सबसे संध्या और यज्ञ भी करवाया, मन्त्रोच्चारण भी सिखाये। व्यवस्थित दिनचर्या के साथ शिविरार्थियों में संध्या और यज्ञ का भाव भी भरा गया। शिविरार्थियों में नया जोश, नई उमंग की लहर दिखाई पड़ रही थी। आर्यसमाज के विशिष्ट लोगों ने कार्यक्रम का निरीक्षण किया और भरपेट सराहना की और कार्यक्रम के औचित्य को देखकर कई बार आयोजित करने का प्रस्ताव भी रखा। जिनमें श्री मोहनलाल चड्डा, श्री गुलाबमुनि वानप्रस्थ के सुपुत्र श्री हरीश बंसल आदि गणमान्य व्यक्ति शुमार होते हैं। सबका संमान, सब पर ध्यान, सबका उत्थान, सबका अवधान की शैली में यह कार्यक्रम एक प्रकार से विजयाभियान का प्रथम सोपान था।

शिविर में आए विशिष्ट लोगों एवं सहयोगियों का संमान किया गया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य ने सांघठनिक विषयों पर जोरदार उपस्थापन किया।और बताया कि आज आर्यसमाज के ऊपर चारों ओर से प्रहार हो रहे हैं ऐसी हालत में हमें संघटन के अन्तःसंघर्ष से उठकर बाह्य आक्रमणों का जवाब और आत्मरक्षा करनी होगी। देश के प्रधानमंत्री के संदेश को जैसा गर्व से कोई दूसरे को बताता है। जो सब संसार का पति है उस परमात्मा के संदेश वेद को हमें और गर्व से जन-जन में पहुंचाता है। संस्कृत वेद विज्ञान प्रदर्शनी ने सबका ध्यान आकृष्ट किया और वैदिक ज्ञान विज्ञान जिसे महर्षि दयानन्द ने अपने ग्रन्थों में बताया है उसका अनुभान किया। प्रदर्शनी की विशेषता के लिए श्री विनय आर्य एवं आचार्य सत्यव्रत जी ने काफी सराहना की। यह प्रदर्शनी आचार्य धनञ्जय शास्त्री जातवेदाः द्वारा लगाया गया था। पांच दिनों तक चलने वाला यह शिविर वैदिक धर्म को मुकम्मल करने में बहुत उपयोगी सिद्ध नजर आने की वजह से शिविर में आए आर्यसमाज के पदाधिकारियों ने छत्तीसगढ़ प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य सहित समस्त पदाधिकारियों से इस शिविर को निरंतर चलते रहने की अपेक्षा जाहिर की।

इस शिविर में सभा मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा, सभा उपमंत्री श्री रवि आर्य, श्री दिलीप आर्य कार्यालय मंत्री, श्री जोगीराम आर्य, श्री धरनीधर आर्य, श्री मोहनलाल चड्डा, श्री राजकुमार भल्ला सहित छत्तीसगढ़ के समस्त जिलों से लगभग 150 से अधिक शिविरार्थियों ने हिस्सा लिया। शिविर के संयोजक सभा के उपप्रधान श्री जितेन्द्र प्रकाश सल्होत्रा व सभा कोषाध्यक्ष श्री अवनीभूषण पुरंग के अथक प्रयास से वांछित प्रतिफल हासिल करने में सफल हो सका है।

अग्निदूत ९वें वर्ष में प्रवेश

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का हिन्दी मासिक मुख पत्र 'अग्निदूत' ९वें वर्ष में प्रवेश कर रही है। सभी सुधी पाठकों को छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं अग्निदूत परिवार की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

– सम्पादक

डॉ. भारतीय जी के जन्म ग्राम परबतसर में आर्यसमाज स्थापित

(विशेष संवाददाता द्वारा)

राजस्थान के नागौर जिले के परबतसर ग्राम में गत २ नवम्बर २०१२ को स्वामी सुमेधानन्द जी (पिपराली आश्रम) के कर कमलों द्वारा आर्यसमाज की स्थापना रेलवे स्टेशन के निकट के भवन में की गई। इसका सम्पूर्ण श्रेय इसी ग्राम के आर्य पुरुष श्री जस्साराम जी को है, जिन्होंने इस अवसर पर वानप्रस्थ की दीक्षा ली। तृतीय आश्रम में वे यशमुनि कहलायेंगे। स्मरण रहे कि परबतसर में १९२८ में प्रसिद्ध आर्य विद्वान् लेखक डॉ. भवानीलाल भारतीय का जन्म हुआ था, जहां उनके पिता स्व. फकीरचंद जी वकालत करते थे। इस नव स्थापित आर्यसमाज में एक ब्रह्मचारी जी स्थायी रुप से रहते हैंऔर नित्य यज्ञ सम्पन्न होती है। परबतसर में अधिकतर वैष्णवों का निवास है। वर्षों पूर्व यहां के आर्यसमाजी स्व. दानमल जी सिंघवी से सत्यार्थ प्रकाश की प्रति लेकर भारतीय जी ने ऋषि दयानन्द की विचार धारा स्वीकार की थी। अपने जन्म ग्राम की इस आर्यसमाज को डॉ. भारतीय जी ने अनेक पुस्तकों से युक्तकर स्टील आलमारी भेंट की है। ध्यान रहे कि इन पुस्तकों में चारों वेदों का चौदह खण्डों में वेदों का पं. जयदेव शर्मा विद्यालंकार रचित भाष्य भी है। परबतसर में यह प्रथम अवसर है जब आर्यसमाज मंदिर में चारों वेदों की स्थापना हुई है।

प्रेषक : डॉ. गौरमोहन, मंत्री आर्यसमाज श्री गंगानगर

वार्षिक आर्य मानव निर्माण शिविर सम्पन्न

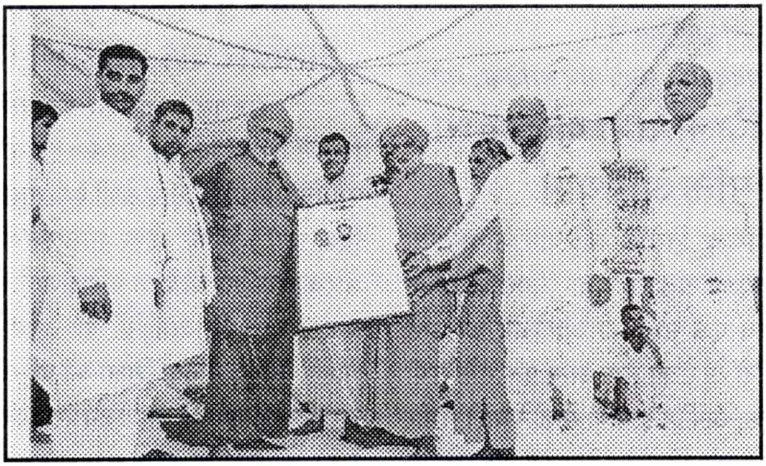

बणी पूण्डरी (कैन्थल हरियाणा)। गुरु ब्रह्मानन्द बणी पूण्डरी (कैन्थल) हरियाणा में २ से ९ जून १३ तक चल रहे आर्य मानव निर्माण शिविर का समापन आनन्दमय वातावरण में सम्पन्न हुआ। इस आठ दिवसीय शिविर में राज्य भर के १५० बच्चों ने भाग लिया।

देश भर से पधारे विद्वानों ने बच्चों को प्राचीन वैदिक संस्कृति का परिचय करवाया। लाठी, जूड़ो, कराटे, आसन, प्राणायाम आदि का अभ्यास बच्चों को करवाया गया। यज्ञ, योग, सन्ध्या आदि का महत्व भी बच्चों को शिक्षकों द्वारा समझाया गया।

शिविर के अन्तिम दिन गुरु ब्रह्मानन्द सरस्वजी के उत्तराधिकारी शिष्य स्वामी बलेश्वरानन्द जी ने राष्ट्र सेवा के लिये स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी को गुरु ब्रह्मानन्द सम्मान से सम्मानित किया गया, सम्मान में स्वामी जी द्वारा शिवानन्द को पगड़ी, शाल, अभिनन्दन पत्र व ५१००० रुपये प्रदान किए गए। समस्त कार्यक्रम का संयोजन राजपालसिंह (बहादुर) ने किया व इस पावन अवसर में महात्मा दयानन्द सरस्वती, आचार्य चन्द्रदेव आर्यवीर दल के प्रचार मंत्री, क्षेत्र के विधायक सुल्तान जड़ौला, आर्य युवक समाज के प्रधान धर्मदेव विद्यार्थी, मुख्य व्यायाम शिक्षक संदीप आर्य, मन्दीप आर्य, अक्षपाल, संदीप आर्य प्रधान आर्यसमाज बरसाना मौजूद थे।

संवाददाता : राजपालसिंह

बुजुर्गों के अनुभवों से लाभ उठाएं

कोटा। बुजुर्ग हमारी धरोहर है। हमें हमारे बुजुर्गों का पूरा सम्मान करना चाहिए। बुजुर्गों के अनुभवों का लाभ लेते हुए अपने जीवन में उतारें व अन्य लोगों के बीच भी बुजुर्गों के अनुभवों को बांटना चाहिए। यह बात आर्यसमाज जिला कोटा के प्रधान अर्जुन देव चड्डा ने आर्यसमाज विज्ञान नगर की ओर आयोजित यज्ञ सत्संग कार्यक्रम में व्यक्त किए।

कार्यक्रम में गोविंद धाम के महन्त व अध्यक्ष भीमसेन साहनी ने आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर आर्य विद्वान के.एल. दिवाकर, पं. रामदेव शर्मा, संजय साहनी, अशोक भसीन, राजीव आर्य, संजय कुमार सहित उपस्थित आर्यजनों ने यज्ञ में वैदिक मंत्रों के साथ आहुतियाँ दी। कार्यक्रम का समापन शांतिपाठ के साथ किया गया।

संवाददाता : जे.एस. दुबे कोटा

आर्ष गुरुकुल शिवपुरी गेरवानी में आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

रायगढ़। आर्यवीर दल प्रशिक्षण एवं युवा चरित्र निर्माण शिविर दि. २६ मई २०१३ को सम्पन्न हुआ। इसमें आर्यवीर प्रथम, द्वितीय श्रेणी एवं शाखा नायक का प्रशिक्षण दिया गया। इसका उद्देश्य शारीरिक शिक्षा के साथ नैतिक, सांस्कारिक एवं बौद्धिक प्रशिक्षण से युवा वर्ग को जागरुक बनाना था। शिविरार्थियों को आसन, प्राणायाम, लाठी, भाला, चाकू, नैतिक शिक्षा का प्रशिक्षण अनुभवी शिक्षकों द्वारा दिया गया। यह आयोजन परममित्र मानव निर्माण संस्थान एवं गुरुकुल आमसेना के संचालक स्वामी धर्मानन्द सरस्वती के आशीर्वाद से सम्पन्न हुआ। इस शिविर में लगभग ७० शिविरार्थियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण देने वालों व्यायाम शिक्षक श्री शैल कुमार आर्य, दुःखनाशन का विशेष योगदान रहा।

समापन अवसर पर छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के जुझारु, कर्मठ प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य एवं सभा मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा सहित अनेक गणमान्य नागरिक संमिलित हुए।

मामा भील स्त्री पुरुषों को वस्त्र वितरित

कोटा। मेहनतकश मजदूरों के प्रति अपनत्व का भाव रखना हमारा कर्त्तव्य है तथा इनके प्रति सेवा का भाव हमें ईश्वर की ओर ले जाता है। यह बात आर्यसमाज जिला सभा कोटा के प्रधान अर्जुनदेव चड्डा ने वस्त्र वितरण कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कही। जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा के द्वारा मजदूर मंडी विज्ञान नगर कोटा में अशोक पार्क के सामने स्थित मजदूरी करने वाले भील मामा स्त्री-पुरुषों को पेन्ट शर्ट का वितरण किया गया।

इस अवसर पर वयोवृद्ध वैदिक विद्वान डॉ. के.एल. दिवाकर, महर्षि दयानन्द वेद प्रचार समिति के पूर्व प्रधान रामप्रसाद याज्ञिक, जिला सभा के प्रचार मंत्री अरविंद पांडेय, पंजाबी समाज सेवा समिति के अध्यक्ष दर्शन पिपलानी एवं आर्यसमाज के मंत्री दिनेश शर्मा, आर्यसमाज भीमगंजमंडी के वरिष्ट सदस्य रामदेव शर्मा, मोहनलाल आर्य, विशाल आर्य सहित कई आर्यजन उपस्थित थे।

संवाददाता : रामप्रसाद याज्ञिक, कोटा

आर्यसमाज जिला सभा कोटा द्वारा नशा मुक्ति अभियान

कोटा। तम्बाकू विरोधी अभियान के अन्तर्गत आर्यसमाज जिला सभा कोटा द्वारा विज्ञान नगर चौराहे के निकट मजदूरों के बीच एक सभा का आयोजन कर उन्हें तम्बाकू व इसके उत्पादों के सेवन तथा अन्य प्रकार के सभी नशों जैसे शराब, स्मेक, अफीम इत्यादि से होने वाले गंभीर समस्याओं एवं उनसे उत्पन्न हानियों से परिचित कराया, जिसमें बड़ी संख्या में स्त्री-पुरुषों ने आर्यसमाज के सन्देश को ध्यान से सुना। कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्यसमाज जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्डा ने किया। हाड़ौती वेद प्रचार समिति के प्रधान रामप्रसाद याज्ञिक ने सुखी जीवन जीने के लिये नशा छोड़ने का आव्हान किया।

कार्यक्रम के अन्त में आर्यसमाज के डॉ. मनोज गुप्ता ने सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया।

संवाददाता : अरविंद पांडेय, कार्यालय प्रचार मंत्री

प्रान्तीय संस्कृत शिक्षक प्रशिक्षण सम्पन्न

चांपा। संस्कृत भारती द्वारा आयोजित दिनांक १७ से २९ मई २०१३ तक प्रांतीय संस्कृत शिक्षक वर्ग प्रशिक्षण सम्पन्न हुआ। इस शिविर के समापन अवसर पर मुख्य अतिथि के रुप में सभा आचार्य अंशुदेव आर्य उपस्थित हुये। उन्होने अपने उद्बोधन में संस्कृत के प्रति जागरुकता का कर्णधार महर्षि दयानन्द सरस्वती को बताया और संस्कृत भाषा के लिए जिनका पूरा परिवार समर्पित हैं ऐसे आचार्य धनञ्जय शास्त्री जातवेदाः जी के सत्प्रयासों की भूरि-भूरि सराहना की। इस शिविर में पूरे प्रान्त से ७० शिविरार्थी शिक्षक-शिक्षिकाओं ने ग्रहण किया। इसके प्रबन्धक प्रान्तीय संघठन मंत्री श्री देवेन्द्र वर्मा थे। इस अवसर पर अखिल भारतीय संघटन मंत्री श्री दिनेश कामत का सान्निध्य प्राप्त हुआ। शिक्षकीय प्रशिक्षणमें आचार्य धनञ्जय शास्त्री (कार्यकारी संपादक अग्निदूत) ने शिक्षकों को प्रशिक्षण प्रदान किया।

इस शिविर में सब कार्य संस्कृत में ही किया गया। संस्कृत संभाषण आबालवद्धवनिता की मुख्य विशेषता थी। संस्कृत माध्यम से संस्कृत सिखाने का विशेष प्रयास इस शिविर में रेखाङ्कित विशेषता थी। समापन अवसर पर राज्यसभा सांसद माननीय श्री नन्दकुमार साय एवं स्थानीय विधायिका श्रीमती कमलादेवी पाटले एवं स्वामी परमात्मानन्द जी उपस्थित थे। चांपा-जांजगीर के विशिष्टजनों के सहयोग से आवास, भोजन की सुन्दर व्यवस्था की गई।

गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय शुक्रताल, मुजफ्फरनगर में प्रवेश प्रारंभ

गुरुकुल महाविद्यालय गंगा के पावन तट पर ऋषि महर्षियों की तपस्थली, प्रकृति के सुरम्य वातावरण में स्थित है। यहां संस्कृत भाषा के साथ-साथ आधुनिक विषयों जैसे अंग्रेजी, गणित, इतिहास, भूगोल एवं अर्थशास्त्र आदि विषयों का अध्यापन सुयोग्य अध्यापकों के द्वारा कराया जाता है। **नये सत्र के प्रवेश आरंभ हो रहे हैं।** यहां पर मध्यमा स्तर (इण्टरमीडिएट) की परीक्षाएँ **उ.प्र. माध्यमिक संस्कृत शिक्षा** परिषद लखनऊ तथा महाविद्यालय स्तर का पाठ्यक्रम सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी द्वारा संचालित है। **संस्था में प्रवेश के लिए छात्र का ५वीं कक्षा उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। कृपया अपने होनहार बच्चों को संस्कारयुक्त शिक्षा दिलाने हेतु दूरभाष पर वार्ताकर प्रवेश दिलायें।** प्रवेश नियम डाक से अथवा व्यक्ति रुप से प्राप्त कर सकते हैं।

रोजगार सूचना : सुयोग्य व्याकरणाचार्य (सहा. अध्यापक), क्लर्क (कम्प्यूटर की विशेष योग्यता हो), हॉस्टल वार्डन (संरक्षक), रसोईया, गौसेवक व चपरासी की आवश्यकता है। वेतन योग्यतानुसार।

संपर्क : ९४१११९२९५२८, ९४१२५९५५४२, ९९९७४३७९९०, ९४११४८१६२४

डॉ. जे.पी. गुप्ता आर्यसमाज भोगल (जंगपुरा) नई दिल्ली के प्रधान निर्वाचित

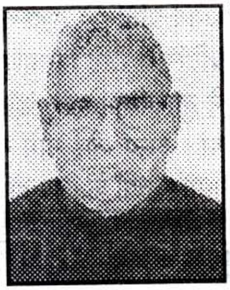

नई दिल्ली। आर्यसमाज भोगल (जंगपुरा) नई का साधारण अधिवेशन और निर्वाचन १९ मई २०१३ को समाज हॉल में आर्यसमाज भोगल के आर्य महानुभावों और महिलाओं की उपस्थिति में हर्षोल्लास के वातावरण में सम्पन्न हुआ। जिसमें प्रसिद्ध दंत चिकित्सक एवं समाजसेवी डॉ. जे.पी. गुप्ता जी को प्रधान पद के लिए सर्वसम्मति से चुना गया।

चुनाव अधिकारी श्री राजेश्वर गुप्त (अधिवक्ता) के अनुसार डॉ. गुप्ता के साथ अन्य जिन पदों के लिए आर्य महानुभावों का चुनाव हुआ उनका पद और नाम निम्नलिखित है - प्रधान : डॉ. जे.पी. गुप्ता, उपप्रधान-डॉ. आभा विरमानी एवं श्री अनिल नागपाल, महामंत्री-श्री अविनाश चन्द्र धीर, कोषाध्यक्ष : श्री श्रवण कुमार वलेचा। सभी निर्वाचित पदाधिकारियों को हार्दिक बधाई।

संवाददाता : अविनाशचन्द्र धीर, नई दिल्ली

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के कुलाधिपति का निर्वाचन सम्पन्न

डॉ. रामप्रकाश जी कुलाधिपति निर्वाचित

दिल्ली । महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के अनन्य शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा लगभग ११० वर्ष पूर्व स्थापित आर्यसमाज की सर्वोच्च शिक्षण संस्था गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय जिसका संचालन आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त तत्त्वावधान में किया जाता है, के कुलाधिपति के रूप में सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान, विचारक, लेखक, राज्य सभा के सांसद डॉ. रामप्रकाश जी को निर्वाचित किया गया। निर्वाचन नैनीताल हाईकोर्ट के आदेश दिनांक ३१अक्टूबर २०१२ के आलोक में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा नियुक्त निर्वाचन अधिकारी एवं भारतीय निर्वाचन आयोग के पूर्व सचिव श्री हरबंस सिंह जी अध्यक्षता एवं देखरेख में नई दिल्ली स्थित विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के कार्यालय में दिनांक २० मई २०१३ को प्रातः ११ बजे सम्पन्न हुआ। दिनांक १४ मई २०१३ को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ब्र.राजसिंह आर्य एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान आचार्य विजयपाल जी ने कुलाधिपति हेतु डॉ. रामप्रकाश जी का नाम प्रस्तुत किया। अन्य कोई नाम न आने के कारण निर्विरोध रूप से आगामी ५ वर्षों के लिए डॉ. रामप्रकाश जी को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का कुलाधिपति निर्वाचित घोषित किया गया। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा निर्वाचन कराए जाने से लम्बे समय से चला आ रहा गतिरोध समाप्त हो गया है।

इस अवसर पर कुलपति प्रो. स्वतंत्र कुमार ने स्वागत एवं धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन कुलसचिव प्रो. ए.के. चोपड़ा ने किया। समारोह में आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि के वरिष्ठ उपप्रधान श्री धर्मपाल आर्य, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के उपप्रधान डॉ. विनय विद्यालंकार, दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य, उपप्रधान श्री शिव कुमार मदान, मंत्री श्री अरुण प्रकाश वर्मा, मंत्री श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता, मंत्री श्री सुखवीर सिंह आर्य, उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. महावीर अग्रवाल, आचार्य वेद प्रकाश शास्त्री, प्रो. जयदेव वेदालंकार, प्रो. भारतभूषण, डॉ. राजकुमार रावत, सहायक मुख्याधिष्ठाता श्री जयप्रकाश विद्यालंकार सहित विभिन्न आर्यसमाजों के प्रतिनिधि एवं प्राध्यापक,कर्मचारी एवं छात्र उपस्थित थे। ***संवाददाता : श्री विनय आर्य दिल्ली***

अग्निदूत के वार्षिक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मुख पत्र मासिक **'अग्निदूत'** के समस्त वार्षिक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क १००/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय को संलग्न मनीआर्डर फार्म में भरकर भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क ८००/- रु. भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। अन्यथा **इस मास से अग्निदूत भेजना बंद कर दिया जायेगा।** पत्र व्यवहार के लिए अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें। **सभा का भारतीय स्टेट बैंक, दुर्ग शाखा बचत खाता एकाऊन्ट नं. : 32914130515 है, जिसमें आप किसी भी भारतीय स्टेट बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. ०७८८-२३२२२५ द्वारा सूचित अथवा अलग से पत्र लिखकर सूचित कर सकते है।**

- दीनानाथ वर्मा, मंत्री मो. ९८२६३६३५७८

कार्यालय पता : 'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग 491001 (छ.ग.) फोन : ०७८८-२३२२२२५

वैचारिक क्रान्ति शिविर में हर्ष और उल्लास तथा सम्मान

शिविर में मातृशक्ति

शिविर में भावविभोर शिविरार्थिगण

जुलाई 2013

CHH-HIN/2006/17407

प्रेषक :

अग्निदूत, हिन्दी मासिक पत्रिका

कार्यालय, छ.ग.प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर,

आर्यनगर, दुर्ग -491001 (छ.ग.)

(छपी सामग्री प्रिन्टेड बुक)

सेवा में

श्रीमान्

वैचारिक क्रान्ति शिविर की भावात्मक झलकियाँ

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा पायोनियर प्रिन्टर्स, ओमपरिसर, आर्यनगर, दुर्ग से छपवाकर छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग से प्रकाशित किया गया.